

जागो, हव्वा!



RVB | VKW

Wach

Wach







ursprü

Kat

*nglicher & unveränderter Absicht
der vollen Gleichstellung der Frau.*

Katharine C. Bushnell

स्त्री की पूर्ण समानता के विषय में परमेश्वर के मूल और अपरिवर्तित अभिप्राय का बाइबल-आधारित सत्य पहचानो।

Katharine C. Bushnell

Katharine C. Bushnell

जागो, हव्वा! (Wach auf, Eva!)

यह (जर्मन) अनुवाद मेरी पत्नी ज़ाबीने (Sabine), हमारी बेटियों और नातिनों को समर्पित है।

विशेष धन्यवाद मेरी पत्नी को सम्पादन-समीक्षा के लिए, मेरी बेटी और उसके पति को शीर्षक और आवरण की रूपरेखा के लिए, और तीनों को उन अनगिनत बातचीतों के लिए, जिनके बिना यह परियोजना कभी पूरी न हो पाती।

Katharine C. Bushnell

जागो, हव्वा!

स्त्री की पूर्ण समानता के विषय में परमेश्वर के मूल और अपरिवर्तित अभिप्राय का बाइबल-आधारित सत्य पहचानो

RVB

जर्मन पुस्तकालय (Die Deutsche Bibliothek) की ग्रंथसूची-सम्बन्धी जानकारी

जर्मन पुस्तकालय ने इस प्रकाशन को जर्मन राष्ट्रीय ग्रंथसूची (Deutsche Nationalbibliografie) में दर्ज किया है; विस्तृत ग्रंथसूची-सम्बन्धी आँकड़े इंटरनेट पर <http://dnb.ddb.de> पर उपलब्ध हैं।

ISBN 978-3-944472-25-6 (RVB)

ISBN 978-3-86269-206-4 (VKW)

© अनुवाद: Reformatorischer Verlag

Friedensallee 76, 22765 Hamburg

अंग्रेज़ी मूल शीर्षक: "God's Word to Women"

जर्मन अनुवाद, टाइपसेटिंग, लेआउट: H. Christian Beese

आवरण-रूपरेखा: LUI & LEI Hamburg

आवरण-चित्र:

Takayuki Ohara / EyeEm, Getty Images

blacked, Getty Images

बाइबल के उद्धरण, जब तक अन्यथा न बताया जाए, सब एल्बरफ़ेल्डर बाइबल (Elberfelder Bibel; जर्मन बाइबल अनुवाद) से लिए गए हैं

मुद्रण: CPI

RVB

Hamburg Bonn

लेखिका के विषय में

कैथरीन सी. बुशनेल (Katharine C. Bushnell) (1855-1946) परमेश्वर की एक साहसी और प्रतिभाशाली सेविका थीं, जिन्होंने इस पद को अपने जीवन का आदर्श-वाक्य बना लिया था: "जो मुझे सामर्थ्य देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकती हूँ"। वे चिकित्सक, मिशनरी, क्रूस की राजदूत, सुधारक, लेखिका और वक्ता थीं, और साथ ही एक प्रखर और मौलिक विद्वान, जो सात भाषाएँ बोलती थीं और प्राचीन यूनानी और इब्रानी में निपुण थीं। बुशनेल ने चिकित्सा का क्षेत्र इसलिए छोड़ा, ताकि वह काम करें, जिसे वे और भी अधिक महत्वपूर्ण समझती थीं, अर्थात् 19वीं शताब्दी के स्त्री-आन्दोलन के **Women's Christian Temperance Union (WCTU)** में अगुवाई की भूमिका निभाकर मनुष्यों की अपमानजनक जीवन-परिस्थितियों को बदलना। बाइबल में स्त्रियों का स्थान बुशनेल के लिए बड़े महत्व का था, क्योंकि वे इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि स्त्रियों की सामाजिक और आत्मिक अधीनता के लिए ग़लत अनुवाद उत्तरदायी थे। 1896 में उन्होंने WCTU छोड़ दिया, ताकि अपने शेष वर्ष इस कार्य को समर्पित करें

कि वे लिखें और स्त्रियों की पूर्ण समानता के विषय में परमेश्वर के मूल और अपरिवर्तित अभिप्राय के बाइबल-आधारित सत्य को आगे पहुँचाएँ।

कैथरीन बुशनेल की **God's Word to Women** एक युगान्तरकारी अध्ययन है, जो स्त्रियों से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र के हर स्थल की सावधानी से जाँच करता है। जेसी पेन-लुईस (Jessie Penn-Lewis) ने कहा कि इस सामग्री ने पवित्रशास्त्र को ऐसी रीति से खोल दिया है, जिसका वर्णन केवल सीधे परमेश्वर की ओर से आए एक प्रकाशन के रूप में किया जा सकता है। आज बहुतों के लिए यह वह पुस्तक है, जिसने उन्हें यह स्वतंत्रता दी कि वे वह बनें, जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है, और वह काम करें, जो पवित्र आत्मा ने उनके हृदयों में डाला है।

“कैथरीन बुशनेल इस विश्वास के साथ मरीं कि उनके जीवन का बहुत कम प्रभाव रहा। परन्तु परमेश्वर बेहतर जानता था।”

चीन में मिशनरी-चिकित्सक के रूप में अपने समय के दौरान बुशनेल ने पाया कि चीनी बाइबल का अनुवाद गलत किया गया था, ताकि स्त्रियों की सेवा के विरुद्ध सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को बल मिले। उन्होंने अपने आप से पूछा कि क्या वही पुरुष-पूर्वाग्रह शायद अंग्रेज़ी अनुवादों को भी प्रभावित करते हैं, और उन्होंने इब्रानी और यूनानी का अपना अध्ययन और गहरा किया। बाद में, जब वे WCTU के लिए सारे संसार में यात्रा कर रही थीं, तब उन्होंने रेलगाड़ियों में, जहाज़ों पर और उन ठहरने के स्थानों में, जहाँ वे रहती थीं, घंटों का उपयोग बाइबल-अनुवादों की मूल भाषाओं के शब्दों से सावधानी से तुलना करने के लिए किया।

अनुभव और अध्ययन के द्वारा परमेश्वर ने कैथरीन बुशनेल को **God's Word to Women** लिखने के लिए तैयार किया। 1908 में पत्राचार-पाठ्यक्रम के रूप में आरम्भ होकर, इसे पहले बुशनेल ने स्वयं अपने प्रकाशन से प्रकाशित किया। आरम्भिक सकारात्मक प्रतिक्रियाओं के बावजूद पुस्तक जल्द ही फिर गायब हो गई; और बुशनेल इस विश्वास के साथ मरीं कि उनके जीवन का बहुत कम प्रभाव रहा। परन्तु परमेश्वर बेहतर जानता था! पुस्तक फिर से खोजी गई और उन लोगों के द्वारा आज भी प्रकाशित की जा रही है, जो इसके अमूल्य महत्व को पहचानते हैं। आज आखिरकार इसे उन लोगों के लिए एक आधारभूत साहित्यिक स्रोत के रूप में वह योग्य मान्यता मिल रही है, जो स्त्रियों की बाइबल-आधारित समानता के लिए सबसे आगे के मोर्चे पर काम कर रहे हैं।

विषय-सूची

पाठ		पृष्ठ
	वर्तमान सम्पादक और अनुवादक की प्रस्तावना	11
	1943 के संस्करण की भूमिका	15
	लेखिका की भूमिका	19
1	मूलभूत बातें	21
2	(उचित और अनुचित) पाठ-आलोचना	25
3	तथ्य और कपोल-कथाएँ	29
4	बुराई का आरम्भ	33
5	“पसली” की कपोल-कथा	37

पाठ		पृष्ठ
6	विवाह के लिए परमेश्वर की व्यवस्था (उत्पत्ति 2:24)	41
7	विवाह के लिए परमेश्वर की व्यवस्था (समापन)	45
8	आरम्भिक काल में स्त्री की गरिमा	49
9	हव्वा का चुनाव और आदम का चुनाव (उत्पत्ति अध्याय 3)	53
10	हव्वा विश्वासी बनती है	57
11	हव्वा और उसकी निन्दा करनेवाले	61
12	आदम और हव्वा के आचरण के विषय में बाइबल की शिक्षा	65
13	क्या परमेश्वर ने स्त्री को शाप दिया?	69
14	गलत व्याख्या (उत्पत्ति 3:16)	73
15	शैतान घात में बैठा है	77
16	हव्वा को परमेश्वर की चेतावनी	81
17	Teshuqah के प्राचीन अनुवाद	85
18	Teshuqah के अनुवादों का इतिहास	89
19	एक आरेख की सहायता से सिंहावलोकन	93
20	दासता से मुक्त पत्नियाँ	95
21	पहले परिवार में एक फूट	99
22	पहले पाप और उनके फल	103
23	छोटी आधार-बातों से दूरगामी निष्कर्ष	107
24	छोटी आधार-बातों से दूरगामी निष्कर्ष (समापन)	111
25	क्या स्त्रियाँ चुप रहें?	115
26	क्या स्त्रियाँ चुप रहें? (1 कुरिन्थियों 14:34)	119
27	क्या स्त्रियाँ चुप रहें? (जारी)	123
28	क्या स्त्रियाँ चुप रहें? (समापन)	127
29	घूँघट की बाल की खाल	131
30	घूँघट की बाल की खाल (जारी)	135
31	घूँघट की बाल की खाल (समापन)	139
32	पौलुस घूँघट के विषय में वास्तव में क्या सिखाता है	143
33	पौलुस घूँघट के विषय में वास्तव में क्या सिखाता है (समापन)	147
34	“अधिकार” “घूँघट” कैसे बन गया	151

पाठ		पृष्ठ
35	"अधिकार" "घूँघट" कैसे बन गया (समापन)	155
36	पुराने नियम में सिर होना	159
37	नए नियम में सिर होना	163
38	"अधीनता" का क्या अर्थ है?	167
39	क्या स्त्रियों को आज्ञा माननी ही होगी?	171
40	स्त्रियों के विषय में तीमुथियुस से पौलुस के शब्द (1 तीमुथियुस 2:8-15)	175
41	इतिहास के प्रकाश में तीमुथियुस से पौलुस के शब्द	179
42	इतिहास के प्रकाश में तीमुथियुस से पौलुस के शब्द (समापन)	183
43	तीमुथियुस से पौलुस के शब्दों की व्याख्या	187
44	तीमुथियुस से पौलुस के शब्दों की व्याख्या (जारी)	191
45	तीमुथियुस से पौलुस के शब्दों की व्याख्या (समापन)	195
46	पौलुस के तर्क के लिए अनावश्यक क्षमा-याचनाएँ	199
47	पति के सिर होने के विषय में अन्तिम टिप्पणियाँ	203
48	"दो प्रकार के बटखरे"	207
49	हमारा विश्वास मूल पाठ पर आधारित होना चाहिए	211
50	दीनता का एक पाठ	213
51	दीनता का एक पाठ (समापन)	217
52	नम्रता क्या है?	221
53	स्त्रियों के लिए नम्रता और दीनता	225
54	स्त्रियों के इतिहास में नया खोजा गया अध्याय	229
55	अन्तर्विवाह और बहिर्विवाह	233
56	बहिर्विवाह की उत्पत्ति	237
57	बहिर्विवाह का वास्तविक कारण	241
58	स्त्री की प्रागैतिहासिक गरिमा के और प्रमाण	245
59	और प्रमाण ... (समापन)	249
60	प्रागैतिहासिक युगों में स्त्री के विषय में और	253
61	सम्बन्ध की गणना माता की वंश-रेखा से होती है	257
62	पुरुष की वंश-रेखा की ओर परिवर्तन	261
63	"और उसकी पीढ़ियों के विषय में कौन विचार करेगा?"	265

पाठ		पृष्ठ
64	मानव-इतिहास की सबसे अच्छी तरह प्रमाणित घटना	269
65	कुँवारी से जन्म	273
66	एक मसीही परिवार की स्थापना	277
67	एक मसीही परिवार की स्थापना (जारी)	281
68	एक मसीही परिवार की स्थापना (जारी)	285
69	एक मसीही परिवार की स्थापना (समापन)	289
70	इसहाक और रिबका	293
71	मूसा की व्यवस्था आदर्श नहीं थी	297
72	मूसा की विधियाँ और स्त्रियाँ	301
73	मूसा की विधियाँ और स्त्रियाँ (समापन)	305
74	पुराना नियम और बहुविवाह	309
75	पुराना नियम और बहुविवाह (समापन)	313
76	प्राचीन काल में और उसके बाद के समय में स्त्रियाँ	317
77	लैंगिक पूर्वाग्रह अनुवादकों को प्रभावित करते हैं	321
78	लैंगिक पूर्वाग्रह अनुवादकों को प्रभावित करते हैं (जारी)	325
79	लैंगिक पूर्वाग्रह अनुवादकों को प्रभावित करते हैं (समापन)	329
80	"याएल धन्य हो"	331
81	"क्योंकि परमेश्वर की ओर से कोई वचन निष्फल न होगा"	335
82	"क्योंकि परमेश्वर की ओर से कोई वचन निष्फल न होगा" (समापन)	339
83	Pericope de Adultura (यूहन्ना 8:1-11)	343
84	इस Pericope की प्रामाणिकता	347
85	"फटे-उधड़े किनारे"	351
86	"नहीं कर सकते" या "नहीं करते" (मत्ती 19:11)	355
87	एक आपात स्थिति के लिए सलाह (1 कुरिन्थियों अध्याय 7)	359
88	पुराने नियम में स्त्री भविष्यद्वक्ता	363
89	स्त्रियाँ प्रचार कर सकती हैं	367
90	स्त्रियों को प्रचार करना और शिक्षा देनी ही चाहिए	371
91	स्त्रियाँ भी गवाह थीं	375
92	स्त्रियाँ भी गवाह थीं (समापन)	379

पाठ		पृष्ठ
93	स्त्रियाँ गवाहों के रूप में तैयार की जाती हैं	383
94	स्त्रियाँ गवाहों के रूप में अभिषिक्त की जाती हैं	387
95	स्त्री की महान नियति	391
96	स्त्रियों के लिए एक और अभिषेक	395
97	बाइबल की भविष्यद्वाणी का स्वरूप	399
98	“बड़ा चिह्न”	403
99	“वह स्त्री” कौन है?	407
100	पहिलौठे का अधिकार या मसूर की दाल?	411
	परिशिष्ट:	
	पवित्रशास्त्र के स्थलों की सूची	415
	विषय और नाम अनुक्रमणिका	430
	Teshuqah अरेख	461
	वे अनुच्छेद, जो पाठ 49 और 79 में अनुवाद में छोड़ दिए गए	463
	कैथरीन बुशनेल का सारणीबद्ध जीवन-वृत्त	467

जर्मन संस्करण के सम्पादक और अनुवादक की प्रस्तावना

बाइबल के प्रति निष्ठावान दृष्टिकोण से एक और “स्त्रियों पर पुस्तक”? क्या ऐसी पुस्तकें पहले से ही पर्याप्त नहीं हैं? ऐसा हो सकता है, परन्तु वे (लगभग) सब एक ही दृष्टिकोण रखती हैं: तथाकथित “पूरकतावाद” का। यह शब्द एक-दूसरे को पूरा करने की, पुरुष और स्त्री के बीच बराबरी के स्तर पर मिलने की धारणा देता है। परन्तु निकट से विचार करने पर यह एक शिष्टोक्ति सिद्ध होता है। विकिपीडिया के अनुसार “शिष्टोक्ति (या मृदूक्ति, लीपापोती, पर्दादारी, आवरण-शब्द या मुलम्मा) एक भाषायी अभिव्यक्ति है, जो किसी व्यक्ति, किसी व्यक्ति-समूह, किसी वस्तु या किसी स्थिति को सुंदर बनाकर, नरम करके या छिपाने के उद्देश्य से नाम देती है”। “पूरकतावाद” शब्द ठीक यही करता है: वह पुरुष के अधीन स्त्री की एकतरफ़ा अधीनता की स्थिति का सुंदर बनाकर, नरम करके और छिपाने के उद्देश्य से वर्णन करता है। यह शब्द स्वयं अपेक्षाकृत नया है, परन्तु बात, या कहें वह शिक्षा, जो इसके पीछे छिपी है, बहुत पुरानी है – फिर भी उतनी पुरानी नहीं, जितना कुछ लोग हमें बताना चाहते हैं, अर्थात् सृष्टि जितनी पुरानी नहीं, पतन जितनी पुरानी भी नहीं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में बाइबल के प्रति निष्ठावान मसीहियों के बीच बहुत समय से एक ओर “पूरकतावादियों” और दूसरी ओर “समानतावादियों” के बीच एक जीवंत बहस चल रही है। जर्मनी में यह बहस अभी अपनी शैशवावस्था में है। वर्तमान में सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) संसार के बड़े दायरों में “पूरकतावादी” दृष्टिकोण का निर्विरोध आकाश पर प्रभुत्व है। यह पुस्तक “समानतावादी” दृष्टिकोण के पक्ष में एक सशक्त वकालत है।

अधीनता की शिक्षा, अर्थात् पत्नी का अपने पति के, बल्कि सामान्य रूप से स्त्री का पुरुष के अधीन किया जाना या अधीन रहना, बाइबल के प्रति निष्ठावान, सुसमाचारवादी दायरों में रूढ़िवादी विश्वास के एक **sine-qua-non**

(अनिवार्य) अंग के रूप में स्थापित हो गई है। यह पौलुस की पत्रियों और पतरस की पहली पत्री के कुछ पदों पर टिकी है, परन्तु और भी पीछे, सृष्टि के वृत्तान्त तक, उत्पत्ति के पहले अध्यायों तक जाती है, और अपने सिद्धान्त की जड़ें पवित्र त्रिएकता की भीतरी संरचना में तक जमा देती है। ऐसा करते हुए वह, अप्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष रूप से, हव्वा के एक बड़े “आदि-दोष” को मानकर चलती है, जो स्त्री-जाति पर आज तक निरन्तर बोझ डालता और उसे हानि पहुँचाता है और पृथ्वी पर छुड़ाई गई कलीसिया के जीवन में समानता को रोकता है। क्योंकि ऐसी धारणा के द्वारा गुलगुता के क्रूस पर मसीह के प्रतिनिधिक प्रायश्चित्त-बलिदान की पहुँच और प्रभावशीलता पर प्रश्न उठाया जाता है, इसलिए इस बहस में बात मसीही विश्वास की नींव से कम किसी चीज़ की नहीं है। इस अर्थ में हम पूरकतावाद के कट्टर समर्थकों के आभारी भी हो सकते हैं कि वे, उन सब के लिए, जिनके सुनने के कान हैं, इस शिक्षा के सुसमाचार-विरोधी स्वरूप को खुलकर व्यक्त करते हैं, क्योंकि वे व्यवहार में पुरुष को स्त्री और मसीह के बीच एक मध्यस्थ के रूप में प्रस्तुत करते हैं और इस प्रकार पौलुस की इस शिक्षा का खण्डन करते हैं कि **एक** ही परमेश्वर है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच **एक** ही मध्यस्थ है, अर्थात् मसीह यीशु, जो मनुष्य है (1 तीमुथियुस 2:5)।

जर्मनी का अपेक्षाकृत नया, अभी नाजुक रिफॉर्म (धर्मसुधारवादी) आन्दोलन भी इस सोच से बचा नहीं है। अनेक माध्यमों से, विशेषकर अमेरिकी सुसमाचारवाद और नव-कैल्विनवाद से, यह शिक्षा इस आन्दोलन की उद्धार-विज्ञान-सम्बन्धी, मानव-विज्ञान-सम्बन्धी और कलीसिया-विज्ञान-सम्बन्धी नींव में इतनी गहराई तक धँस गई है कि बहुत से लोग, जिन्होंने इसे अपने आत्मिक माँ के दूध के साथ पिया है, स्त्री के स्थान के विषय में ऐसी सोच के बाहर किसी विश्वास की कल्पना ही नहीं कर सकते।

एक विचित्र बात यह है कि कलीसियाओं में स्त्रियाँ भी इस दृष्टिकोण का ज़ोर-शोर से बचाव करती हैं। यह कम रहस्यमय है और मनोवैज्ञानिक रूप से समझ में भी आता है, जब हम सोचते हैं कि यहाँ “सच्चा स्त्रीत्व”, “परमेश्वर के मन के अनुसार स्त्री” इत्यादि इत्यादि जैसी और भी कई शिष्टोक्तियाँ मोर्चे पर लगा दी जाती हैं।

एक और विचित्र बात यह है कि वे लोग भी, जो “पूरकतावाद” के प्रति शंकालु या आलोचनात्मक हैं, अधिकतर संयम बरतते हैं और इसके विषय में बहस से कतराते हैं – एक ऐसी बहस, जो “पूरकतावादियों” की ओर से अक्सर अनुचित हथियारों से लड़ी जाती है। इस प्रकार हर उस व्यक्ति को, जो कोई और दृष्टिकोण रखता है, तुरन्त उदारवादी, आधुनिकतावादी और नारीवादी ठहरा दिया जाता है, जो “परमेश्वर के स्पष्ट वचनों” की अवहेलना करता है और “परमेश्वर की व्यवस्थाओं” के विरुद्ध विद्रोह करता है। क्योंकि मसीही स्त्रियों की एकतरफ़ा अधीनता के लिए समझ में आनेवाले, तर्कसंगत प्रमाणों की कमी है, इसलिए वे लोग भी, जो परमेश्वर के सार्वभौम पूर्वनिर्धारण और चुनाव को दृढ़ता से नकारते हैं, “स्त्री-प्रश्न” में परमेश्वर की सार्वभौम स्वतंत्रता का सहारा लेना पसंद करते हैं, जिसके द्वारा उसने अपनी “पदानुक्रमिक व्यवस्थाएँ” निर्धारित की हैं।

इस सब पर उस व्यवस्थावाद की एक तेज़ हवा बहती है, जिसकी पौलुस ने अपनी पत्रियों में अथक रूप से निन्दा की और जिसके विरुद्ध वह लड़ा। इंटरनेट पर इस विषय पर पूरी की पूरी प्रवचन-शृंखलाएँ मिलती हैं। एक प्रवचन में पास्टर यह तो मानता है कि “हम नहीं जानते” कि पौलुस का “घूँघट” से क्या अभिप्राय था; फिर भी, “आज्ञाकारी और सुरक्षित पक्ष में” रहने के लिए सब स्त्रियों को आराधना-सभा में सावधानी के तौर पर अपना सिर ढाँकना चाहिए, और “पास्टरों की पत्नियाँ तो अच्छा उदाहरण देते हुए पहले से ही आगे चल रही हैं”।

“पूरकतावाद” के आत्मिक “आकाश पर प्रभुत्व” को ऊँचे दर्जे के नामों और उच्च कोटि की, बहुत पढ़ी जानेवाली, अन्यथा अच्छी टीकाओं, अध्ययन-बाइबलों और सिद्धान्त-ग्रंथों का सहारा मिलता है, जिनमें निकट से देखने पर

एक बात ध्यान खींचती है: जहाँ आत्मिक शिक्षा के लगभग सब विषयों और पहलुओं में भाषा-विज्ञान और व्याख्या का छोटे से छोटा पत्थर भी उलट-पलटकर देखा जाता है, वहीं “स्त्री-प्रश्न” में, नरमी से कहें तो, एक प्रकार की लापरवाही छाई रहती है, कोई यह भी कह सकता है, लगभग चालबाज़ व्याख्या की-सी धूर्तता। उदाहरण के लिए, जब वेन ग्रूडेम (Wayne Grudem) अपनी “Biblische Dogmatik” (जर्मन में) में इस कम महत्वपूर्ण न होनेवाली बात के विषय में, कि उत्पत्ति 2:18 में “सहायिका” (जर्मन में: Gehilfin) का वास्तविक अर्थ “सहायक” (Helfer; इब्रानी `ezer) है, एक ऐसा शब्द, जो, जैसा वह सही समझाता है, अक्सर स्वयं परमेश्वर के लिए प्रयुक्त होता है, यह लिखता है कि “जब भी कोई किसी दूसरे की सहायता करता है, ... तो सहायता करनेवाला व्यक्ति उस व्यक्ति की तुलना में, जिसकी सहायता की जाती है, अधीन और निम्न स्थान लेता है”, तो यह न केवल एक ऐसी बुद्धि के अयोग्य है, जो दूसरे सन्दर्भों में बहुत सक्षम है, बल्कि परमेश्वर का अनादर है, जो हमारा महान सहायक है। या जब कोई दूसरा व्याख्याकार इस तथ्य से कि आदम हव्वा को दो बार नाम देता है (“नारी” (जर्मन में: Männin) और “हव्वा, सब जीवितों की माता”), स्त्री पर पुरुष की श्रेष्ठता और प्रभुता का एक सामान्य दावा निकालता है, तो यह इस तथ्य को देखते हुए बेतुका है कि पुराने नियम में मनुष्यों ने अक्सर बड़े, बचानेवाले अनुभवों के बाद अनायास परमेश्वर को नाम दिए। ये वर्तमान रचनाओं से दो उदाहरण हैं। और भी उदाहरण दिए जा सकते हैं, परन्तु मैं इतने पर ही छोड़ता हूँ।

मैं अक्सर यह तर्क सुनता हूँ कि आरम्भिक मसीही, कलीसियाई पिता और धर्मसुधारक सब के सब “पूरकतावाद” का दृष्टिकोण रखते थे और कि हर वह व्यक्ति, जो “स्त्री-प्रश्न” पर कोई और दृष्टिकोण रखने का साहस करता है, कलीसिया के 2000 वर्ष के इतिहास से टकराता है। यह सच है कि बहुत से कलीसियाई पिताओं का स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण बहुत संदिग्ध था और कि 16वीं शताब्दी के धर्मसुधारक भी इस प्रश्न में कोई नया प्रकाश नहीं लाए। परन्तु यदि हम लम्बी अवधि को किसी शिक्षा की वैधता का प्रमाण मान लें, तो धर्मसुधारक भी होना ही नहीं चाहिए था, क्योंकि महान धर्मसुधार भी विशेषकर उन दृढ़ता से स्थापित झूठी शिक्षाओं पर प्रश्न उठाना था, जो बहुत सी शताब्दियों तक टिकी रही थीं। आशा की जानी चाहिए कि “स्त्री-प्रश्न” के लिए भी वह समय आए, जब कलीसिया में दोनों लिंगों की भलाई के लिए जमी हुई सोच की संरचनाएँ टूटें और उस मसीही स्वतंत्रता (लिंग-आधारित पूर्वाग्रह से भी) का एक नया आत्मा प्रवेश कर सके, जिसके लिए हम बुलाए गए हैं।

पश्चिमी देशों में इस शिक्षा को जो महत्व दिया जाता है, वह विशेषकर सभ्यता से, या समृद्धि से भी जुड़ी एक घटना है। उदाहरण के लिए ईरान या चीन जैसे देशों से समाचार मिलते हैं कि वहाँ स्त्रियाँ अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में सुसमाचार के प्रसार और नई कलीसियाओं के निर्माण में औसत से कहीं बड़ी भूमिका निभाती हैं।

इस पुस्तक में, जो मूल रूप से 20वीं शताब्दी के आरम्भ में पत्राचार-पाठ्यक्रम के रूप में प्रकाशित हुई थी, कैथरीन बुशनेल हमें बाइबल की एक यात्रा पर ले जाती हैं – उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक। इसमें वे “स्त्री-प्रश्न” से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र के अनगिनत स्थलों पर विचार करती हैं। बाइबल की भाषाओं का उनका ठोस ज्ञान और उनके वर्षों के अध्ययन पवित्रशास्त्र के बहुत से रहस्यमय लगनेवाले अंशों पर नया प्रकाश डालते हैं। इसके अलावा वे तथाकथित ऐतिहासिक-आलोचनात्मक शोध के और डार्विनवाद के भी बहुत से तर्कों पर विचार करती हैं। वे अपने समय के बहुत से प्रकृति-वैज्ञानिकों और सांस्कृतिक मानव-विज्ञानियों को उद्धृत करती हैं। दूर-दूर तक यात्रा कर चुकी मिशनरी-चिकित्सक और सुसमाचार की राजदूत के रूप में वे बार-बार व्यक्तिगत अनुभव और व्यावहारिक अन्तर्दृष्टियाँ जोड़ती हैं।

यह पुस्तक जान-बूझकर इस प्रकार रची गई है कि वह स्वाध्याय और दोहराने के लिए आमंत्रित करती है। 100 पाठों में से (लगभग) हर एक अपने नोट्स के लिए एक खाली स्थान के साथ समाप्त होता है, और पुस्तक के अन्त

में बाइबल-स्थलों की एक विस्तृत अनुक्रमणिका और शब्दार्थों के साथ एक विषय और नाम अनुक्रमणिका जोड़ी गई है।

कैथरीन बुशनेल बार-बार बहनों से ज़ोरदार, सुविचारित अपीलें करती हैं कि वे बाइबल की भाषाओं के अध्ययन में लगे, ताकि वे पढ़ सकें कि परमेश्वर का वचन उनसे वास्तव में क्या कहना चाहता है, न कि वह, जो पुरुष कहते हैं कि वह उनसे कहता है। मेरा दृढ़ विश्वास है: इससे पहले कि हम उस आत्मिक जागृति का अनुभव करें, जिसकी हम लालसा करते हैं और जिसके लिए हम प्रार्थना करते हैं, हमारी कलीसियाओं को इस अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न में एक नई दिशा पानी होगी, ताकि स्त्रियाँ अपनी चुप्पी और अपने छाया-जीवन से मुक्त हों और सुसमाचार में बराबर के सहकर्मियों के रूप में अपनी परमेश्वर-प्रदत्त बुलाहट का अनुसरण कर सकें।

एच. क्रिस्टियन बेसे (H. Christian Beese), हैम्बर्ग, अक्टूबर 2020

पाठ 6 – विवाह के लिए परमेश्वर की व्यवस्था

“इस कारण पुरुष [पति] अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा।”

45 उत्पत्ति 2:24 की इस मूलभूत विवाह-व्यवस्था का पालन स्त्रियों को कभी मात्र सम्पत्ति बन जाने से बचाता, और इस प्रकार पूरी मानवजाति को एक ऊँचे नैतिक स्तर पर बनाए रखता। ज़रा सोचिए, आज भी अन्यजाति लोगों की नैतिक गरिमा के लिए कितना कुछ प्राप्त किया जा सकता था, यदि मिशनरी अपने धर्मान्तरित लोगों से यह माँग करते कि वे विवाह की बाइबल-आधारित व्यवस्था का पालन करें। जो बातें पूर्वी देशों की स्त्रियों के उत्पीड़न को कम करने में सहायक होतीं, वे ये हैं: (1) पति **रोटी कमानेवाले** के रूप में अपनी पत्नी के घर में आर्थिक मूल्य रखता; जबकि अभी स्थिति यह है कि स्त्री, जो ऐसे और-और बच्चे जनती है जिनका पेट भरना है, दुर्व्यवहार की शिकार होती है, विशेषकर जब वह बेटी को जन्म देती है। (2) पुरुष, जो अजन्मे बच्चों, दूध पीते शिशुओं या छोटे असहाय बच्चों के झुंड से बँधा नहीं होता, किसी पराए घर में दास नहीं बनाया जा सकता था, क्योंकि वह चला जाता और अपनी सहायता पर निर्भर पत्नी और बच्चों का भरण-पोषण उन्हीं पर छोड़ देता जो उसके साथ बुरा व्यवहार करते हैं। परन्तु मातृत्व के बाँधनेवाले प्रभाव और माँ के प्रेम की शक्ति माताओं को उन लोगों का शिकार बना देते हैं जो उन्हें दास बनाना चाहते हैं। (3) पुरुष ऐसा बना ही नहीं है कि बलपूर्वक उसका सतीत्व छीना जा सके या उसका शरीर किसी पराए घराने के लिए लाभदायक व्यापार की वस्तु बना दिया जाए; परन्तु ये बुराइयाँ उन विधवाओं का इतना आम भाग्य हैं जो अपने मृत पतियों के पराए घर में पीछे छोड़ दी जाती हैं, कि कुछ पूर्वी देशों में, विशेषकर भारत में, “विधवा” शब्द ही बदनाम हो गया है। (4) गर्भावस्था और प्रसव के समय एक माँ की प्रायः प्रेम से देखभाल की जाती है, जब वह अपनी माँ के पास होती है, चाहे अपने पिता की छत के नीचे या उसके निकट। परन्तु पराए घर में ऐसे समयों में उसकी अक्सर लज्जाजनक उपेक्षा की जाती है; और यह लम्बे समय में पूरी मानवजाति को दुर्बल करता है। (5) बेटी को विवाह के बाद घर पर रखने और बेटे को विवाह के बाद घर से भेजने की प्रथा बाल-विवाहों पर भारी रोक लगाती, क्योंकि माता-पिता परिवार की समृद्धि में योगदान देनेवाले परिवार-सदस्यों से इतनी जल्दी अलग नहीं होते।

46 सब स्त्रियों को यह जानना चाहिए कि परमेश्वर के वचन ने आरम्भ में इस दृष्टि से संसार को उनके लिए एक अच्छा स्थान बनाया था, और मानव-इतिहास की प्रारम्भिक अवस्था में ही इस विवाह-व्यवस्था के द्वारा उनके अपमान के आगे एक बड़ी आगल लगा दी थी – वास्तव में यह मानव आचरण के लिए पहला सामाजिक-नैतिक नियम है। इसके अतिरिक्त शोध से यह बात अधिकाधिक पुष्ट हो रही है कि मानव-इतिहास के सबसे प्रारम्भिक

युगों में, कुछ अपवादों को छोड़कर, यह व्यवस्था कोई मृत अक्षर नहीं थी, जैसी कि आज है। यह सामान्य बात थी कि पुरुष या तो अपनी पत्नी के माता-पिता की छत के नीचे रहता था या वहाँ बार-बार उससे मिलने आता था – वह कभी अपने माता-पिता की सुरक्षा नहीं छोड़ती थी। **माता-पिता** अपनी विवाहित बेटियों के “स्वाभाविक रक्षक” थे, – न कि पति, जो कई बार अपने ऊपर किए गए भरोसे के अयोग्य सिद्ध होता था। प्राचीन काल की प्रथा यह थी कि उसे कुछ हद तक स्वस्थ सन्देह के साथ एक पराया व्यक्ति समझा जाए, जब तक कि वह वास्तव में यह सिद्ध न कर दे कि वह एक स्त्री की उचित रीति से देखभाल करने में सक्षम है।

“माता-पिता अपनी विवाहित बेटियों के ‘स्वाभाविक रक्षक’ थे, – न कि पति, जो कई बार अपने ऊपर किए गए भरोसे के अयोग्य सिद्ध होता था।”

47 विवाह के बाद किसी स्त्री के अपने सम्बन्धियों के पास या उनके निकट रहने का (और इस प्रकार उसके परिवार के उसका “स्वाभाविक रक्षक” होने का) सबसे बड़ा लाभ मुख्य रूप से यह होता कि इससे सामाजिक नैतिकता दृढ़ होती। कुछ वर्ष पहले हमारे एक सबसे बड़े नगर में एक डॉक्टर को नगर की “सामाजिक बुराई” की बहुत गहराई से जाँच करने के लिए पुलिस की सहायता मिली, और उसने बदनाम जीवन-परिस्थितियों में जी रही सैकड़ों स्त्रियों और लड़कियों के बयानों का विश्लेषण प्रकाशित किया। उसकी पुस्तक इस समय मेरे पास नहीं है कि मैं उसमें से उद्धरण दूँ, परन्तु यदि मुझे ठीक याद है तो उसका निष्कर्ष यह था कि **दुष्ट पुरुषों से विवाह** वेश्यावृत्ति का एक आम कारण था। जवान लड़कियों ने उन पुरुषों से, जो उनके साथ सोए थे, उनके चरित्र के बारे में अधिक सोचे-समझे या जाने बिना विवाह कर लिया; और उसके बाद विवाह ने उन्हें अपने पतियों के सामने ऐसी प्रतिकूल स्थिति में डाल दिया कि उन्हें बलपूर्वक या केवल चिन्ताओं के मारे सड़क पर धकेला जा सकता था, ताकि वे [पुरुषों की] अनैतिकता से पैसा कमाएँ। शायद पति ने आरम्भ में उससे इस उद्देश्य से विवाह नहीं किया था कि अपनी पत्नी को ऐसी रीति से अपनी जीविका कमाने के लिए मजबूर करे; परन्तु क्योंकि उसमें स्वयं शालीनता की कोई सही समझ नहीं थी, इसलिए कठिन समय में उसे कोई कारण नहीं दिखा कि उसकी पत्नी अनैतिक रीति से जीविका कमाने में हाथ क्यों न बँटाए। ठीक ऐसी आपात स्थितियों का सामना करने के लिए स्त्री के सम्बन्धियों को यह अधिकार होना चाहिए कि जब ऐसा खतरा हो तब वे हस्तक्षेप करें। विवाह-कानून को उनके लिए यह सम्भव बनाना चाहिए कि वे अपनी बेटी या बहन के साथ निकट सम्पर्क में बने रहें। परन्तु जैसी स्थिति अब है, ऐसा पुरुष यदि चाहे तो अपनी पत्नी को संसार के छोर तक ले जा सकता है, और कोई उसे रोक नहीं सकता।

48 इसके क्या परिणाम हो सकते हैं, यह सीखने के लिए किसी बड़े पूर्वी नगर में जाना ही काफ़ी है। केवल एक उदाहरण देने के लिए: मैं इतनी जल्दी नहीं भूलूँगी कि कैसे हम एक बार अँधेरे में इन बड़े पूर्वी नगरों में से एक की एक बदनाम गली में गए थे। जिन बहुत-सी अभागी लड़कियों को हमने देखा, उनके विषय में हमें पता चला कि उनमें बड़ी संख्या उन जवान स्त्रियों की थी जो सोचती थीं कि उन्होंने पूर्वी व्यापारिक प्रतिष्ठानों के प्रतिष्ठित थोक-व्यापारियों से विवाह किया है। दास-व्यापारियों ने इन लड़कियों को यूरोप, इंग्लैंड और अमेरिका के गाँवों में ढूँढ़ा था, उनके साथ सोए थे, उनके साथ विधिवत विवाह-संस्कार किया था और फिर उन्हें पूर्वी दास-बाज़ार में ले आए थे। नियमित रूप से, हर शाम, उनके “पति” अपने स्वामित्व वाले घरों में घूमते और देखते कि रात के लिए सब कुछ ठीक है। फिर वे पास के अपने क्लब-भवन में जाते (जिसे हमने उनकी अनुपस्थिति में देखा), उस भोजन और पेय से दावत उड़ाते जो उनकी दासियों ने कमाया था, और रात दो या तीन बजे भरपूर मदिरापान के बाद लौटकर अपनी दास बनाई गई पत्नियों से वह एक-एक पैसा छीन लेते जो उन्होंने इस बीच कमाया था। जब राशि सामान्य से कम होती, तो वे अक्सर उन्हें कोड़े मारते थे। श्वेत दास-व्यापार पर तब तक प्राणघातक प्रहार नहीं होगा, जब तक हमारे पास ऐसे विवाह-कानून न हों जो दुष्ट पतियों से स्त्रियों की उचित सुरक्षा सुनिश्चित करें; और ऐसी सुरक्षा

तब तक पर्याप्त नहीं होगी, जब तक किसी स्त्री के सम्बन्धी, यदि वे भले लोग हैं, कानून द्वारा उसके “स्वाभाविक रक्षक” के रूप में मान्य न हों, जो किसी पुरुष को अपनी पत्नी को किसी पराए देश में ले जाने की अनुमति न दें – चाहे अत्यधिक भरोसा करनेवाली पत्नी जाने को तैयार भी हो –, यदि यह स्थानान्तरण उसके परिवार के निर्णय के विरुद्ध है, अर्थात् जब तक कि वह न्यायालय के सामने इसके लिए कोई उचित कारण प्रस्तुत न कर सके।

“परमेश्वर की विवाह-व्यवस्था हमें अपनी बेटियों के लिए उसकी पितृवत देखभाल और सुरक्षा के विषय में कितना कुछ सिखाती है!”

49 विवाह-सम्बन्ध का ठीक यही दुरुपयोग जापानियों में (और दुःखद मात्रा में) संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रशान्त तट पर देखा जा सकता है। जापान में एक गुप्त विवाह-एजेंसी है जो लगातार ऐसी जापानी लड़कियों की खोज में रहती है जो विवाह करने के लिए अमेरिका जाएँगी। इस एजेंसी के पुरुष भी बार-बार जापान लौटते हैं, ताकि लड़कियों से विवाह करके उन्हें अमेरिका ले आएँ। अक्सर ये जापानी पुरुष अच्छे परिवारों के होते हैं, परन्तु स्वयं वे विदेशों में रहने के कारण बिगड़ गए हैं। यह जानकर कि वे अच्छे परिवारों से आते हैं, लड़कियों के माता-पिता उन पर भरोसा करते हैं कि वे विवाह के बाद उनकी बेटियों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे। इस प्रकार ये लड़कियाँ फँस जाती हैं; और हर रात अमेरिका में उन्हें सड़कों पर और जापानी अड्डों में धकेला जाता है, ताकि वे उन “पतियों” के लिए पैसा कमाएँ जिनसे उनका आदरपूर्वक विवाह हुआ था। यह कोई कल्पना नहीं है। मैं इसे मसीही जापानी सज्जनों, मसीही मिशनरियों, जापानी वाणिज्य-दूतों और ऐसे ही अन्य लोगों की गवाही के आधार पर जानती हूँ।

परमेश्वर की विवाह-व्यवस्था हमें अपनी बेटियों के लिए उसकी पितृवत देखभाल और सुरक्षा के विषय में कितना कुछ सिखाती है! बिल्कुल आरम्भ में ही उसकी पहली कही गई आज्ञा दिखाती है कि उनके अधिकार और उनकी गरिमा उसके हृदय के निकट हैं।

पाठ 7 – विवाह के लिए परमेश्वर की व्यवस्था (समापन)

50 परमेश्वर चाहता था कि मानवीय विवाह कलीसिया के साथ, अर्थात् “नए यरूशलेम”, उसकी दुल्हन के साथ मसीह की एकता का एक प्रतीकात्मक (टाइपोलॉजिकल) चित्र हो। मसीह ने अपनी वह सारी महिमा, जो उसकी अपने पिता के पास थी, त्याग दी और हमारे साथ एक होने के लिए इस पृथ्वी पर आया। परन्तु विवाह को केवल मसीह के पहले आगमन का ही प्रतीक नहीं होना था, बल्कि उसके दूसरे आगमन की धारणा को भी अपने में सम्मिलित करना था; केवल दोनों घटनाओं को साथ लेकर ही प्रतिरूप (टाइप) मूलरूप (एंटीटाइप) को पूर्ण रूप से दर्शाता है। हर मसीही विवाह को इन दोनों घटनाओं का आदर करना चाहिए। पति का अपने सम्बन्धियों के बन्धनों से अलग होना पत्नी के आत्म-प्रेम के त्याग का प्रतिफल होना चाहिए, क्योंकि वह प्रसव और बच्चों के पालन-पोषण के जोखिम अपने ऊपर लेती है। यही पौलुस इफिसियों 5:31-32 में सिखाता है, जहाँ वह इस दायित्व को उद्धृत करता है कि पुरुष अपनी पत्नी के लिए अपने सम्बन्धियों को छोड़ दे, और आगे कहता है: **“पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूँ।”** आदम और हव्वा एक ही समय में सृजे गए थे और पहले एक साथ थे, और फिर आदम पर आई एक “भारी नींद” के दौरान अलग किए गए। इसी प्रकार मसीह हमारे साथ था और फिर मृत्यु की “भारी नींद” के द्वारा हमसे अलग हुआ, जबकि हम उसके बहाए गए लहू पर विश्वास के द्वारा मानो उसके जी उठे हुए पंजर से निकले। आदम अलग किया गया, ताकि वह हव्वा के साथ पहले से भी अधिक आनन्द

में फिर से एक हो सके, – ऐसे आनन्द में कि इस घटना के उत्सव में उसके होंठों से अनायास कविता फूट पड़ी, जिसे डॉ. आर. एफ. हॉर्टन (Dr. R. F. Horton) ने पद्य में ढाला:

"She, she is bone of my bone,
And flesh of my flesh is she;
'Woman' her name, which has grown
Out of man,—out of me."

51 और एक दिन मसीह फिर आएगा, "हमारे आनन्द के लिए" – क्योंकि, जैसा उसने कहा (यूहन्ना 16:7), उसका जाना और फिर लौटना हमारे लिए "भला" था। और एक दिन हम वह समझेंगे जो अभी नहीं पहचानते, कि मसीह हमारा "दूसरा स्वयं" है, जैसा आदम ने हव्वा के विषय में पहचाना था; "क्योंकि हम उसकी देह के अंग हैं" और "प्रभु की संगति में" रहकर हम "एक आत्मा" भी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मरियम मगदलीनी ने इसे सबसे पहले अनुभव के रूप में खोजा – क्योंकि उसने उस व्यक्ति से, जिसे वह माली समझ रही थी, पुकारकर कहा: "हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहाँ रखा है, और मैं उसे ले जाऊँगी", अर्थात् उसकी देह पर अपनी न्यायसंगत सम्पत्ति के रूप में एक अनजाना दावा, ऐसे प्रेम में जो लिंगभेद से परे पवित्र था। कोई आश्चर्य नहीं कि वह अपने आप को केवल ऐसे प्रेम पर ही प्रकट कर सका! (यूहन्ना 20:11-18)।

52 जब मसीह पृथ्वी पर था, उस समय यह प्रथा थी कि दूल्हा और उसके पुरुष मित्र एक विवाह-जुलूस में दुल्हन को उसके पिता के घर से लेकर अपने पिता के घर ले जाते थे। परन्तु मसीह का दस कुँवारियों का दृष्टान्त (मत्ती 25:1-13) ईश्वरीय व्यवस्था के ऐसे उल्लंघन का चित्र प्रस्तुत नहीं करता। कुँवारियाँ दुल्हन के माता-पिता के घर में प्रतीक्षा करती हैं, और जब यह पुकार होती है कि दूल्हा आ रहा है, तो वे उससे भेंट करने निकलती हैं और उसे और उसके साथियों को दुल्हन के घर में एक भोज के लिए ले आती हैं। "सामान्यतः दुल्हन को दूल्हा और उसके मित्र लेने आते थे; परन्तु यहाँ दूल्हे को लेने जाना कुँवारियों का काम है, और विवाह दुल्हन के घर में होता प्रतीत होता है, जैसे न्यायियों 14:10 में" (डे वेट्टे (De Wette), लांगे (Lange) द्वारा उद्धृत)। ऐसा ही तब भी होगा जब मसीह फिर आएगा। जो उसके आगमन की बाट जोहते हैं और उसके लिए तैयारी करते हैं, वे उसके आने की पुकार पर बाहर निकलेंगे, ताकि "बादलों पर उठा लिए जाएँ कि हवा में प्रभु से मिलें", और फिर विवाह-भोज के लिए पृथ्वी पर, दुल्हन के घर लौटेंगे, जहाँ वे उसके साथ हजार वर्ष तक जीवित रहेंगे और राज्य करेंगे (देखिए 1 थिस्सलुनीकियों 4:17; प्रकाशितवाक्य 20:6)।

परमेश्वर की विवाह-व्यवस्था से स्त्रियों को क्या-क्या लाभ होते, इसके विषय में मैंने केवल अनुमान ही नहीं लगाए हैं। मानवजाति के सबसे प्रारम्भिक युगों में परमेश्वर की विवाह-व्यवस्था का पालन किया जाता था। पुरातत्त्ववेत्ता इस तथ्य को हाल ही में प्रकाश में ला रहे हैं; और मैं (जहाँ तक स्थान होगा) उनकी खोजों की एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करूँगी।

53 आधुनिक काल में इस विषय पर लिखनेवाले पहले व्यक्ति स्विस विधिवेत्ता बाखोफ़ेन (Bachofen) थे, सन् 1861 में। श्री जे. एफ. मैकलेनन (J. F. McLennan) अंग्रेज़ी में उनके निष्कर्षों के समर्थक बने और इस विषय पर अपने स्वयं के अनुसंधान भी प्रकाशित किए। बहुत-से अन्य लोग उनके पीछे चले, जैसे टायलर (Tylor), वेस्टरमार्क (Westermarck), फ़्रेज़र (Fraser), लॉर्ड एवबरी (Lord Avebury) (सर जॉन लबक, Sir John Lubbock) और रॉबर्टसन स्मिथ (Robertson Smith)। वास्तव में किसी प्राचीन जाति का कोई भी आधुनिक इतिहास तब तक पूर्ण

नहीं माना जाता, जब तक वह उस समय से आरम्भ न हो जिसमें मातृसत्ताएँ भी थीं और पितृसत्ताएँ भी। उत्पत्ति के 36वें अध्याय में हम पाते हैं कि “एदोम के अधिपतियों” में से कुछ स्त्रियाँ थीं।

54 इस प्रारम्भिक सभ्यता की तीन मुख्य विशेषताएँ हैं: (1) पत्नी के माता-पिता, उसके अपने सम्बन्धियों के साथ, जीवन भर उसके “स्वाभाविक रक्षक” बने रहते हैं; (2) घर की सम्पत्ति स्त्रियों के हाथ में एकत्र रहती है; (3) वंश-परम्परा स्त्रियों के द्वारा गिनी जाती है, पुरुषों के द्वारा नहीं, क्योंकि जब पुरुष विवाह करते हैं तो वे अपने सम्बन्धियों से अलग हो जाते हैं; बच्चे माँ के कुल-नाम से जाने जाते हैं। सभ्यता के इस रूप को अक्सर “मातृवंश” (स्त्री के द्वारा वंश-गणना) नाम से पुकारा जाता है, क्योंकि उल्लिखित तीसरी बात ही बाकी सब का कारण है। उदाहरण के लिए, मैकलेनन यूनानी स्त्रियों के सामाजिक पतन के विषय में बोलते हुए कहते हैं: “हम देखते हैं कि जब तक स्त्रियों के द्वारा गिनी जानेवाली वंश-परम्परा अपना पुराना महत्व बनाए रखती थी, तब तक कोई भी कारण इसे उत्पन्न नहीं कर सकते थे। दूसरी ओर, हम इस पतन का एक पर्याप्त कारण पितृवंश की धीरे-धीरे बढ़ती प्रधानता में और विवाह-व्यवस्था के उन परिवर्तनों में देख सकते हैं जो यह प्रधानता अपने साथ लाई।”

55 प्रश्न उठता है कि मातृवंश से पितृवंश की ओर यह परिवर्तन किस कारण हुआ। आधुनिक विकासवादी, जो ईश्वरीय प्रकाशन को मानना नहीं चाहते, कहते हैं कि पहले सामान्य स्वच्छन्द यौनाचार फैला; और क्योंकि कोई पुरुष अपने बच्चों को नहीं जानता था, इसलिए परिणामस्वरूप केवल मातृवंश को मान्यता दी गई। परन्तु प्रमुख विकासवादी, डार्विन (Darwin) और स्पेंसर (Spencer), कहते हैं कि ऐसा स्वच्छन्द यौनाचार कभी प्रचलित नहीं रहा; और यह बात इस सिद्धान्त के विरुद्ध बहुत प्रबल रूप से जाती है, क्योंकि वे सबसे महत्वपूर्ण विकासवादी थे। और इसके अतिरिक्त बाइबल हम पर सत्य प्रकट करती है, और हमें विकासवादियों के सिद्धान्त पर देर तक सोचने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर की विवाह-व्यवस्था ने आरम्भ में मातृवंश की स्थापना की; और लेमेक जैसे इतने घृणित चरित्र का वर्णन बाइबल में भला क्यों किया गया होता, सिवाय इसके कि इस विवाह-व्यवस्था के उल्लंघन और बहुविवाह के आरम्भ को दर्ज किया जाए? थोड़ा आगे, उत्पत्ति के 6वें अध्याय की आरम्भिक आयतों में, हम स्त्रियों पर “थोक में” (“en gros”) कब्ज़ा किए जाने के विषय में पढ़ते हैं; और वृत्तान्त कहता है, “पृथ्वी उपद्रव से भर गई थी।” लेमेक का पुत्र “ताँबे और लोहे को गढ़ता था”, जैसा हम चौथे अध्याय में पढ़ते हैं; और लोहे के युद्ध-हथियारों का पहला प्रयोग स्त्रियों को बन्दी बनाने के लिए हुआ। जब इन बन्दी स्त्रियों को उनके सम्बन्धियों से छीन लिया गया, तो वे और उनके बच्चे उनके पतियों के कुल के माने जाने लगे; और इस प्रकार पितृवंश उत्पन्न हुआ। जलप्रलय ने भी स्त्रियों को बन्दी बनाने की आदत को जड़ से नहीं मिटाया, क्योंकि हम न्यायियों की पुस्तक में दबोरा के विषय में पढ़ते हैं, जो सीसरा से उसके स्त्रियों के विरुद्ध किए गए अपराधों के कारण युद्ध करती है; और सीसरा की माँ के विषय में कहा गया है कि वह अपने पुत्र की बाट जोह रही थी कि वह युद्ध की लूट के साथ लौटे – “हर पुरुष के पीछे एक लड़की, दो लड़कियाँ”।

56 डॉ. ए. सी. डिक्सन (Dr. A. C. Dixon) *London Christian* (16 नवम्बर 1911) के एक लेख में कहते हैं: “इस सभ्यता को देखिए जिसकी नींव स्वयं परमेश्वर ने रखी, और आप उसे यह कहते सुनेंगे: ‘इस कारण पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन होंगे’। स्त्री को प्राथमिकता दी गई है। यह स्त्री नहीं है जो पिता और माता को छोड़कर अपने पति से मिली रहती है; बल्कि यह पुरुष है जो अपनी माता और अपने पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहता है।” एक बात में मैं डॉ. डिक्सन से सहमत नहीं हूँ। परमेश्वर की इस विवाह-व्यवस्था पर आधारित सभ्यता ने स्त्री को उसके पति से श्रेष्ठ नहीं बनाया, परन्तु उसने उसे उसकी अधीनस्थ बनने से रोका। इस सम्बन्ध में याकूब और उसकी पत्नियों, लिआ और राहेल, की कहानी शिक्षाप्रद है। जब वह अपने ससुर को छोड़ना चाहता है, तो वह नम्रता से अपनी पत्नियों से अपने साथ चलने का

अनुरोध करता है। और वे यह नहीं कहतीं: “अपने पति के पीछे चलना हमारा कर्तव्य है”, बल्कि “हमारे पास जाने के दो कारण हैं: हमारे पिता ने हमें कोई विरासत नहीं दी; और उसने याकूब की मज़दूरी अपने पास रख ली, जो हमें और हमारे बच्चों को दी जानी चाहिए थी” (उत्पत्ति 31:14-16)। इससे स्पष्ट होता है कि जहाँ ये स्त्रियाँ रहती थीं, वहाँ पुरुष अपनी बेटियों को विवाह में बेचते नहीं थे, और स्त्रियाँ विवाह के कारण अपने को इस बात के लिए बाध्य नहीं समझती थीं कि संसार के छोर तक अपने पतियों के पीछे जाएँ। मान्यता-प्राप्त भाषाविद् कहते हैं कि अब्राहम ने अबीमेलक से (उत्पत्ति 20:13) सारा के विषय में कहा: “**क्योंकि परमेश्वर ने उसे मेरे साथ भटकने के लिए प्रेरित किया**”, न कि केवल “जब परमेश्वर ने मुझे ... भटकने दिया”। अर्थ में अन्तर यह है: उस समय यह अपेक्षा नहीं की जाती थी कि पत्नी अपने पति के भ्रमणों में उसके पीछे चले, बल्कि इसके विपरीत। परमेश्वर चाहता था कि सारा और अब्राहम दोनों एक मूर्तिपूजक वातावरण से बाहर निकलें; इसलिए वह सारा को अपनी इच्छा का प्रकाशन देता है, ताकि वह सामान्य प्रथा का पालन करके अपने सम्बन्धियों के पास न रह जाए।

“परमेश्वर की इस विवाह-व्यवस्था पर आधारित सभ्यता ने स्त्री को उसके पति से श्रेष्ठ नहीं बनाया, परन्तु उसने उसे उसकी अधीनस्थ बनने से रोका।”

पाठ 8 – आरम्भिक काल में स्त्री की गरिमा

57 कैम्ब्रिज के प्रोफ़ेसर रॉबर्टसन स्मिथ (Robertson Smith) लिखते हैं: “उत्पत्ति के अनुसार विवाह में यह बात सम्मिलित है कि पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़कर अपनी पत्नी की ओर मुड़ता है, और वे एक तन होंगे। यह पूरी तरह उसके अनुरूप है जो हम कुलपिताओं के इतिहास के अन्य भागों में पाते हैं। श्री मैकलेनन (McLennan) ने याकूब के विवाहों का उल्लेख किया है, जिनमें लाबान स्पष्ट रूप से नियम को अपने पक्ष में रखता था, जब उसने कहा कि याकूब को अपनी पत्नियों और उनके बच्चों को ले जाने का कोई अधिकार नहीं था; और इसी प्रकार इस तथ्य का भी कि जब अब्राहम ‘इसहाक के लिए पत्नी’ ढूँढ़ रहा था, तो उसके सेवक ने सोचा कि सम्भवतः शर्त यह होगी कि इसहाक आकर उसके लोगों के बीच बस जाए।” [इस स्थिति में अब्राहम सहमत नहीं हो सकता था, क्योंकि परमेश्वर ने उसे स्पष्ट रूप से उनकी मूर्तिपूजा से दूर बुलाया था]। “मिस्री पत्नी से उत्पन्न यूसुफ़ के बच्चे केवल गोद लिए जाने के द्वारा ही इस्राएली बने; इसी प्रकार शिमशोन की पलिशती पत्नी अपने लोगों के बीच रहती है, और वह वहाँ उससे मिलने जाता है। ये सब बातें उसे स्पष्ट करती हैं जिसे उत्पत्ति 2:24 में विवाह के मूल रूप (टाइप) के रूप में प्रस्तुत किया गया है।” और हम पूछ सकते हैं कि इस आदिकालीन कथन का – “अपनी पत्नी से मिला रहेगा; और वे एक तन होंगे” – और क्या अर्थ है, यदि यह नहीं कि वह उसी वंश-परम्परा का हो जाएगा जिसकी उसकी पत्नी है? यही लेखक लिखते हैं: “मातृवंश ही वंश का मूल रूप है, साझा मातृत्व ही रक्त-सम्बन्ध की एकता का मूल रूप है, जो सम्पूर्ण सामी भाषा-प्रयोग पर छाया हुआ है।” जे. पी. पीटर्स (J. P. Peters), डी.डी., उत्पत्ति के इसी खण्ड के विषय में लिखते हैं: “पुरुष और स्त्री के सम्बन्ध को जिस प्रकार यहाँ प्रस्तुत किया गया है, उसमें स्पष्टतः हमारे पास इस कथा की बड़ी प्राचीनता का एक और प्रासंगिक प्रमाण है। यह स्त्री नहीं है जो पिता और माता को छोड़कर पुरुष से मिली रहती है, बल्कि यह पुरुष है जो पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ हमारे सामने प्राचीन मातृसत्ता का एक अवशेष है, उस विवाह-सम्बन्ध का जिसका एक उदाहरण हमें शिमशोन की कथा में मिलता है, जिसमें पत्नी अपने गोत्र, अपने कुल या अपने परिवार के साथ रहती है और पुरुष उससे मिलने आता है। ऐसी स्थिति में सन्तान पत्नी के परिवार की होती है, पुरुष के परिवार की नहीं” (Early Hebrew Story, पृ. 223)।

58 महान पुरातत्त्ववेत्ता प्रोफ़ेसर फ़्लिंडर्स पेट्री (Flinders Petrie) ने भी इस विषय पर रोचक बातें लिखी हैं, और मैं उनका एक लम्बा उद्धरण दे रही हूँ, ताकि यह दिखा सकूँ कि मैं इस विषय में अतिशयोक्ति नहीं कर रही हूँ। वे लिखते हैं: “हम इस धारणा के इतने आदी हो गए हैं कि पूर्व में स्त्रियाँ सदा पराधीन रही हैं – जैसी वे अब मुहम्मदी धर्म के अधीन हैं – कि हमें एक बिल्कुल भिन्न व्यवस्था के लिए अपनी आँखें खोलनी होंगी, जो हमें कुलपिताओं के युग के आरम्भिक इतिहास में दिखाई जाती है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि हमारी वर्तमान व्यवस्था एक ओर समाज में पुरुषों और स्त्रियों का पूर्ण मेल-जोल है, जबकि दूसरी ओर सारे अधिकार और सम्पत्ति पुरुषों के पास रहते हैं। पूर्व का आरम्भिक आदर्श पुरुषों और स्त्रियों के लिए अलग-अलग संसार रखता था, जबकि स्त्रियाँ अपने अधिकार और अपनी सारी सम्पत्ति अपने पास रखती थीं।”

“मातृवंश ही वंश का मूल रूप है, साझा मातृत्व ही रक्त-सम्बन्ध की एकता का मूल रूप है।”

59 प्रोफ़ेसर पेट्री आगे कहते हैं: “पु.नि.¹ में [हव्वा के अतिरिक्त] व्यक्तित्व के रूप में सामने आनेवाली पहली स्त्री सारा है, ‘कुल की प्रधान’, जैसा कि उसके नाम ही से पता चलता है। सार (Sar) सरदार के लिए प्रयुक्त होनेवाली सामान्य प्राचीन उपाधि है, जो निकट पूर्व में आज भी प्रचलित है। ... उसकी स्वतन्त्र स्थिति इस बात से स्पष्ट होती है कि वह, अब्राहम से बिल्कुल अलग, फ़िरौन के महल में या अबीमेलेक के दरबार में रही। बाद के लेखकों का कोई भी प्रयास, जो इसका कोई और अर्थ निकालना चाहता है, इस स्वतन्त्रता को समझा नहीं सकता, जिसकी पिछले वर्षों में बस उपेक्षा कर दी गई है।

“सारा का मग्रे में अपना स्वतन्त्र निवास था और वह वहाँ रहती थी, जबकि अब्राहम बर्शेबा में रहता था; और लिखा है कि वह उसके लिए विलाप करने और उसे मिट्टी देने आया। इसलिए उसकी यात्राओं के समय और बाद के जीवन में उसकी स्थिति किसी भी प्रकार एकान्त में रखी गई पराधीनता की नहीं थी, बल्कि एक स्वतन्त्र कुल-प्रधान या ‘गोत्र-माता’ की थी।

60 “क्योंकि सारा की कोई बेटी नहीं थी, इसलिए परिवार में से किसी को लाना आवश्यक था जो कुल की प्रधान हो, और रिबका को पुराने देश से यहाँ लाया गया। सारा का राजकीय तम्बू इसहाक ने मग्रे से तीन या चार दिन की यात्रा की दूरी पर बेर-लहै-रोई में स्थानान्तरित किया, और ज्यों ही रिबका आई, उसे उस तम्बू में ठहराया गया। उसके बाद इसहाक ने उससे विवाह किया; और ऐसा प्रतीत होता है कि वह भी सारा के समान स्वतन्त्र थी। क्योंकि रिबका की कोई बेटी नहीं थी जो उसकी उत्तराधिकारी होती, इसलिए याकूब को क्रम में सबसे बड़ी लिआ से विवाह करना पड़ा, और जब तक इस प्रकार लिआ की स्थिति सुरक्षित न हो गई, तब तक वह राहेल को नहीं पास सका।

61 “मिस्र की ओर प्रस्थान से पहले ग्यारह पुत्रों के बीच केवल एक बेटी का नाम लिया गया है, अर्थात् दीना, ‘न्याय करनेवाली स्त्री’ [जैसा कि इस नाम का अर्थ है], कुल-प्रधान लिआ की बेटी। एक हिब्वी² से उसके विवाह पर उसके भाई क्रोधित थे, क्योंकि इससे वह अपना न्याय-पद एक अन्य जाति के अधीन कर देती; और केवल खतने के द्वारा हिब्वियों का इस्राएली जाति में मिलाया जाना ही इस स्थिति को सुलझा सकता था (उत्पत्ति 34:1-24)। इसके और बाद भी हम इस वंश-परम्परा को उस एकमात्र स्त्री के नाम में देख सकते हैं जिसका नाम अगली पीढ़ी में से लिया गया है: सेरह (उत्पत्ति 46:17), जो सारा का ही एक रूप है, ‘गोत्र की अगुवा’। क्योंकि दीना की स्पष्टतः कोई सन्तान नहीं थी, इसलिए यह स्वाभाविक था कि लिआ की दासी जिल्पा की किसी वंशज को लिया जाए। इस प्रकार आशेर ने, जिसके कारण लिआ विशेष रूप से आनन्दित हुई थी, अपनी बेटी सेरह के रूप में अगली कुल-प्रधान दी।”

62 स्त्री की इस आरम्भिक गरिमा का कुछ अंश बाइबल के इतिहास के पूरे क्रम में देखा जा सकता है, विशेषकर उस “राजमाता” में जो राजा के साथ-साथ अधिकार चलाती है, और जिसकी चर्चा 600 ई.पू. में भी, यिर्मयाह के समय में, यिर्मयाह 13:18 में की गई है (यहाँ इस शब्द का अनुवाद अक्सर भूल से “रानी” किया जाता है)।

इब्रानी भाषा से पहले अक्कादी और सुमेरी भाषाएँ थीं; और प्रोफ़ेसर सेस (Sayce) बताते हैं कि प्राचीन सुमेरी भजनों का सामी भाषा में अनुवाद करनेवालों ने “स्त्री और पुरुष” को “पुरुष और स्त्री” में बदल दिया और ऐसे और परिवर्तन किए, ताकि पुरुषों को प्रधानता मिले। सुमेर, अक्काद, बेबीलोनिया, अरब, फ़ीनीके और मिस्र – ये सब अत्यन्त प्राचीन सभ्यताएँ मातृसत्ता के लक्षणों से चिह्नित थीं। सर डब्ल्यू. रैमज़े (Sir Wm. Ramsay) एशिया माइनर के विषय में भी यही कहते हैं। मातृवंश प्राचीन यूनान में भी प्रमाणित किया जा सकता है – स्पार्टा की स्त्री अपनी गरिमा खोनेवाली अन्तिम थी। लगभग 450 ई.पू. में भी हेरोडोटस (Herodot) ने लूकिया के लोगों के विषय में लिखा: “यदि कोई अपने पड़ोसी से पूछे कि वह कौन है, तो वह कहेगा कि वह अमुक माता से उत्पन्न हुआ है, और वह अपनी माता के पूर्वजों के नाम गिनाएगा।” पहले यह माना जाता था कि इसका कारण यह था कि पिता की एक से अधिक पत्नियाँ होती थीं; परन्तु आज इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि यह सही व्याख्या नहीं है। “भाई” के लिए यूनानी शब्द ही (adelphos) माता के द्वारा रिश्ते का वर्णन करता है, पिता के द्वारा नहीं।

63 हम परमेश्वर की व्यवस्था से इतनी दूर हो गए हैं कि आज ब्रिटिश कानून के अनुसार माता माता-पिता में नहीं गिनी जाती। एडवर्ड षष्ठ (Edward VI.) के शासनकाल में दीवानी और कलीसियाई न्यायालयों ने मिलकर घोषित किया कि डचेस ऑफ़ सफ़ोक (Suffolk) अपने ही जन्माए हुए पुत्र की सम्बन्धी नहीं है। इंग्लैंड की कलीसिया तलाक़ की कट्टर विरोधी है। फिर भी जब हम मत्ती 19 में तलाक़ के विषय में प्रभु यीशु का निर्णय पढ़ते हैं, तो पाते हैं कि यह निष्कर्ष, “इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे”, इस आधार-वाक्य पर टिका है: “इस कारण पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे”। कलीसिया इस निर्णय के निष्कर्ष को [तलाक़ का निषेध, अनुवादक] कभी प्रभावी रूप से लागू नहीं कर पाएगी, जब तक वह उन आधार-वाक्यों की अनदेखी करती है जिन पर वह टिका है।

64 हमारे इब्रानी व्याकरण और शब्दकोश बताते हैं कि जातियों से सम्बन्धित लगभग सभी समूहवाचक शब्द और नगरों तथा समुदायों के नाम स्त्रीलिंग हैं। ऐसा कैसे हुआ, जबकि यह बस अकल्पनीय है कि मसीह के समय के पुरुषों ने उस जैसी भीड़ का वर्णन करने के लिए, जिसे मसीह ने भोजन कराया, कोई स्त्रीलिंग शब्द गढ़ा हो? सुसमाचार के वृत्तान्त के अनुसार उसने “स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हज़ार पुरुषों” को भोजन कराया। और एक अन्य अवसर पर उसने “स्त्रियों और बालकों को छोड़ पाँच हज़ार पुरुषों” को भोजन कराया। फिर, प्रेरितों के काम में पतरस, स्तिफ़नुस और पौलुस विभिन्न अवसरों पर भीड़ को “हे पुरुषो, भाइयो” कहकर सम्बोधित करते हैं, और स्त्रियों का उल्लेख तक नहीं करते। जब पुरुष लगभग पूरी तरह पहला स्थान लेता है, तो भीड़ में केवल उसी के लिंग का उल्लेख किया जाता है। परन्तु यह भली-भाँति समझा जा सकता है कि जिन समयों में रक्त-वंश स्त्रियों के द्वारा गिना जाता था, उनमें किसी जाति या एक ही रक्त के समुदाय का उल्लेख करते समय जातियों, नगरों, समुदायों और भीड़ों को स्त्रीलिंग नाम मिले। नगरों, गाँवों आदि के ये समूहवाचक शब्द स्त्रीलिंग थे, क्योंकि ऐसे स्थान स्त्रियों के स्वामित्व वाले घरों के समूहों से बने थे, जिनसे ये स्त्रियाँ कम ही कहीं और जाती थीं। गिनती 21:25, यहोशू 15:45 आदि में नगरों के लिए जो शब्द है, वह है “बेटियाँ”। इसी कारण यशायाह 12:6 में “सिय्योन के निवासी” के स्थान पर मूल पाठ में “सिय्योन की निवासिनी” है, और ऐसे उदाहरण पु.नि. में बहुत आम हैं।

पाठ 9 – हव्वा का चुनाव और आदम का चुनाव

65 “आत्मिक बाइबल-आलोचना” पर सहायक व्याख्यानों की एक श्रृंखला में डॉ. ए. टी. पियर्सन (Dr. A. T. Pierson) ने कहा: “बौद्धिक क्षेत्र में मनुष्य किसी बात पर इसलिए विश्वास करता है कि वह सत्य है; आत्मिक क्षेत्र में मनुष्य जानता है कि कोई बात सत्य है, क्योंकि वह उस पर विश्वास करता है।” यदि आत्मा आपके साथ है कि आपको सत्य का निश्चय कराए, और यदि आप उस पर विश्वास करते हैं जो आज हमारे पाठ में कहा जा रहा है, तो **सत्य को ग्रहण कीजिए**, उसके अनुसार जीवन बिताइए और दूसरों को भी उसकी शिक्षा दीजिए, चाहे वह उस पिछली शिक्षा को, जो आपने पाई है, और उन पूर्वाग्रहों को, जो आपने शायद अपना लिए हैं, पूरी तरह उलट ही क्यों न दे।

66 आइए, इन पाठों के सन्दर्भ में हम यह जानने की हर इच्छा को, कि “स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है, पुरुष या स्त्री”, एक अयोग्य प्रश्न समझकर सदा के लिए अपने से दूर कर दें। फिर भी स्त्रियों के रूप में हमें स्त्री की नियति में रुचि है, और होनी भी चाहिए। यह नियति अदन की वाटिका में निर्धारित की गई थी। वह क्या है?

67 कृपया उत्पत्ति 2:17-18 पढ़िए। लिंगों के अलग किए जाने से कुछ ही पहले, जब आदम उत्तरदायित्व की परिपक्वता तक पहुँच चुका था और अपने आचरण के लिए जवाबदेह था, परमेश्वर ने उसे “**भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष**” का फल खाने से मना किया। हव्वा तब तक “रची” नहीं गई थी, जैसा कि पद 18 दिखाता है; आज्ञा मध्यम पुरुष एकवचन में दी गई थी। यह “वृक्ष” ठीक-ठीक क्या था, यह हमें नहीं बताया गया। यह सोचना उचित है कि “भला और बुरा” शब्द व्यवहार में “दुःख और सुख” के लगभग समानार्थी हैं, जैसा कि यह 2 शमूएल 19:35, अय्यूब 2:10, यशायाह 7:15-16, यिर्मयाह 42:6 आदि बाइबल-स्थलों में आता है। ऐसी व्यवस्था के प्रति आदम की अवज्ञा का परिणाम एक ओर “दुःख” और “सुख” के बीच एक स्पष्ट अन्तर की खोज होता, और दूसरी ओर यह प्रबल परीक्षा कि आगे से सुख को खोजा जाए और हर “दुःख” से, चाहे वह हितकारी ही क्यों न हो, बचा जाए। शायद परमेश्वर आदम का ध्यान केवल “दुःख और सुख” से ऊँचे प्रेरक कारणों और आचरण के सिद्धान्तों की ओर लगाना चाहता था। यदि हम इस निषेध को ऐसे समझें, तो इसका विशेष महत्व था, क्योंकि यह ठीक उस घटना से पहले आया जब परमेश्वर ने आदम को एक स्त्री का साथ दिया। सबसे बढ़कर लिंगों के आपसी सम्बन्ध में उत्तरदायित्व के दुःखों से बचना निन्दनीय है। इसका अर्थ है व्यक्ति का पतन और अन्ततः मानवजाति का पतन; और यह अनिवार्य रूप से मातृ-लिंग की ओर से पीड़ा और अत्यधिक बोझ लाता है।

68 हव्वा तब “रची” गई जब यह निषेध पहले ही कहा जा चुका था, और हमें यह नहीं बताया गया कि उसने बाद में इसे सर्वशक्तिमान से सुना, या केवल आदम के द्वारा इसके विषय में जाना। बाइबल की गवाही के अनुसार, जब शैतान ने उसे आज्ञा तोड़ने के लिए बहकाया, तब तक उसने सम्भवतः इसके विषय में केवल आदम से ही सुना था; क्योंकि निर्देश को दोहराते समय उसने भाषा को सजाया, व्यवस्था के शब्दों को एक स्थान पर अधिक कड़ा और दूसरे स्थान पर अधिक हल्का कर दिया – और ये किसी दूसरे हाथ से सुनाई गई कहानी के लक्षण हैं, न कि प्रत्यक्ष स्रोत से दिए गए विवरण के। अन्त में दोनों ने उस वृक्ष का फल खाया, और परमेश्वर दिन के ठण्डे समय में उनसे लेखा लेने आया। उसने आदम से पूछा: “**क्या तू ने उस वृक्ष का फल खाया है?**” और उत्तर था: “**जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है, उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।**” तब परमेश्वर ने स्त्री से पूछा, और उसने उत्तर दिया: “**सर्प ने मुझे बहका दिया, तब मैं ने खाया।**” कृपया उन शब्दों पर ध्यान दीजिए जिन्हें मैंने मोटे अक्षरों में लिखा है।

69 मेरे विचार में इन दोनों उत्तरों की आपस में तुलना करना उचित है, क्योंकि इनमें हमें आगे आनेवाली बातों का एक संकेत मिलता है। दोनों स्वीकार करते हैं: **“मैं ने खाया”**, और दोनों सच्चाई से उस **तात्कालिक** प्रभाव का नाम लेते हैं जो खाने तक ले गया। यहाँ तक दोनों बराबर हैं। परन्तु आदम को और कुछ कहने की विवशता महसूस होती है। हव्वा के द्वारा उसके पतन का एक मूल कारण था: शैतान। परन्तु आदम हव्वा के समान शैतान का उल्लेख नहीं करता; और फिर भी वह किसी मूल कारण के विषय में चुप नहीं रहता; वह सीधे परमेश्वर के मुँह पर उसी को यह मूल कारण होने का दोष देता है – कि उसने उसे वह स्त्री दी। और इसमें सबसे बुरी बात यह है कि शैतान उस बातचीत के समय उपस्थित था या निकट था, और यदि किसी मूल कारण का उल्लेख करना ही था, तो उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती थी, या केवल जान-बूझकर ही की जा सकती थी। शैतान परमेश्वर के प्रति आदम के रवैये से, और इस बात से कि उसने परोक्ष रूप से परमेश्वर पर मूर्खता का दोष लगाया, उतना ही प्रसन्न हुआ होगा जितना स्वयं अपने, अर्थात् परीक्षा करनेवाले के प्रति आदम के रवैये से, क्योंकि आदम ने उसे आरोपों से बचा लिया। क्या यही घटना, आदम का यही आचरण, वह नहीं है जिसकी ओर अय्यूब संकेत करता है (अय्यूब 31:33), जब वह विलाप करता है: **“यदि मैं ने आदम के समान अपने अपराध को ढाँपकर अपने अधर्म को अपने मन में छिपा रखा हो ...”**? डॉ. लांगे (Dr. Lange) कहते हैं (देखिए खण्ड 36): **“आदम को [वाटिका की] बुराई की एक विद्यमान शक्ति से रखवाली और रक्षा करनी थी।”** क्या शायद यही कारण नहीं है कि आदम उस शैतान का उल्लेख नहीं करता, जो भीतर प्रवेश कर सका?

“आदम ने सीधे परमेश्वर के मुँह पर उसी को पतन का मूल कारण होने का दोष दिया – कि उसने उसे वह स्त्री दी।”

70 नियति एक भयानक शब्द है। किसी मनुष्य का भाग्य एक क्षण के निर्णय से पूरे जीवन के लिए निर्धारित हो सकता है, और यह निर्णय – जब तक कि ईश्वरीय हस्तक्षेप के लिए विनती न की जाए – आनेवाली पीढ़ियों में उसकी सन्तान का स्वाभाविक झुकाव बन सकता है। पवित्रशास्त्र में यही इस्राएलियों और एदोमियों का पाठ है। याकूब के इतिहास के एक निश्चित बिन्दु तक एसाव का जीवन याकूब के जीवन से अधिक आदरणीय प्रतीत होता था। परन्तु जब एसाव दो मार्गों के दोराहे पर खड़ा था, तो उसने अपने पहिलौठे के अधिकार की कीमत पर शारीरिक तृप्ति को चुना (उत्पत्ति 25:29-34)। बहुत बाद में याकूब दो मार्गों के एक दोराहे पर आया, और इस खतरे के बावजूद कि उसका भाई उसे अकेले और बिना तैयारी के एक घातक आक्रमण से चौंका दे, वह पूरी रात ईश्वरीय आशीष के लिए मल्लयुद्ध करता रहा (उत्पत्ति 32:24-32) और उसे प्राप्त किया। परमेश्वर ने इन दोनों के जन्म से पहले ही देख लिया था कि वे किस प्रकार के निर्णय लेंगे, और इसी पूर्वज्ञान के अनुसार अपना **“चुनाव”** किया। अब परमेश्वर – इस बार आदम और हव्वा के निर्णयों के आधार पर – एक **“चुनाव”** करने वाला है, ठीक वैसे ही जैसे बाद में इतिहास में उसने याकूब को आनेवाले मसीहा का मूलपुरुष चुना।

71 आदम ने एक बुरा निर्णय लिया। उसने सर्प का पक्ष लिया और परमेश्वर की निन्दा करनेवाला बन गया। परन्तु हव्वा ने शैतान की उपस्थिति में उसके चरित्र को उजागर कर दिया, और इस प्रकार अपने और उसके बीच शत्रुता उत्पन्न कर दी। इसके बाद जो हुआ, वह हव्वा के बेहतर चुनाव का स्वाभाविक परिणाम था। परमेश्वर ने निश्चय किया कि वह स्त्री को शैतान से और भी दूर खींच लेगा। उसने शैतान से कहा: **“और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा”** (3:15)। वास्तव में वह यह कह रहा था: **“उसने सम्बन्ध तोड़ने का निर्णय लिया है; मैं इस दरार को और चौड़ा करूँगा।”**

आगे आनेवाली महिमामय प्रतिज्ञा के विषय में बहुत कुछ कहा जा चुका है, परन्तु आइए, हम रुककर विचार करें कि कई व्याख्याकार इसमें इससे अधिक अर्थ नहीं पाते कि मनुष्य और निम्न पशु, अर्थात् साँप, के बीच सदा एक स्वाभाविक शत्रुता रहेगी!

72 हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि परमेश्वर ने इस समय शैतान और स्त्री के बीच शत्रुता रखी। यह बड़ी हद तक उन बुराइयों के पूरे क्रम को समझाता है जिनकी भविष्यद्वाणी अगले पद (3:16) में की गई है, जिन्हें निःसन्देह पारम्परिक दृष्टिकोण के अनुसार इस बात का परिणाम माना जाता है कि हव्वा ने वर्जित फल खाकर और अपने पति को भी देकर पाप को संसार में प्रवेश कराया। शैतान की शत्रुता ही स्त्री के दुःख का कारण है। इस विषय पर और प्रकाश आगे के पाठों में आएगा।

73 “तेरे वंश और इसके वंश के बीच में”, परमेश्वर स्त्री के विषय में शैतान से कहे गए इन वचनों में जोड़ता है। आज “परमेश्वर के सार्वभौमिक पितृत्व” और “मनुष्यों के सार्वभौमिक भाईचारे” पर दिए जानेवाले सामान्य ज़ोर के बावजूद, जो आंशिक रूप से सत्य है, हम, जो पवित्रशास्त्र को अधिकार मानते हैं, यह नहीं भूल सकते कि परमेश्वर के समान शैतान की भी मनुष्यों के बीच अपनी सन्तान है – नैतिक और आत्मिक अपराधी। “अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं।” यूहन्ना 6:70 में लिखा है: “क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुन लिया? तौभी तुम में से एक व्यक्ति शैतान है।” जब यहूदियों ने घोषणा की: “हमारा एक पिता है, अर्थात् परमेश्वर”, तो यीशु ने उत्तर दिया: “यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझ से प्रेम रखते। ... तुम अपने पिता शैतान से हो” (यूहन्ना 8:41-44)। प्रेम का प्रेरित यूहन्ना भी यह नहीं कहता कि सब मनुष्य परमेश्वर की सन्तान हैं, बल्कि चेतावनी देता है: “हे बालको, किसी के भरमाने में न आना। जो धर्म के काम करता है, वही उसके समान धर्मी है। जो कोई पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, ... इसी से परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं” (1 यूहन्ना 3:7-8,10)। परमेश्वर किसी पतित कलीसिया की नया जन्म न पाई हुई “व्यभिचार की” सन्तान (इब्रानियों 12:8) को अपनी सन्तान के रूप में ग्रहण नहीं करता, न मान्यता देता है।

74 “वह [स्त्री का वंश] तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को कुचलेगा।” पुराने अनुवादों में यहाँ “soll” (जर्मन में: ‘करे’ – आज्ञा का भाव) शब्द है, परन्तु स्पष्टता के लिए दोनों स्थानों पर “wird” (‘करेगा’) होना चाहिए। ये भविष्यकाल के रूप हैं, आज्ञार्थक नहीं। परमेश्वर शैतान को स्त्री के वंशज की एड़ी कुचलने की आज्ञा नहीं देता; वह केवल भविष्यद्वाणी करता है कि ये बातें होंगी। यह भविष्यद्वाणी विशेष रूप से शैतान के महान शत्रु, कुँवारी मरियम से जन्मे यीशु मसीह, से सम्बन्ध रखती है; परन्तु यह सब विश्वासियों से भी सम्बन्ध रखती है, क्योंकि प्रेरित पौलुस कहता है (रोमियों 16:20): “शान्ति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा”। हम इस विषय को अपने अगले पाठ में आगे बढ़ाएँगे।

पाठ 11 – हव्वा और उसकी निन्दा करनेवाले

82 यदि इस पुस्तक का आकार अनुमति देता, तो मैं कैनन पेन-स्मिथ (Payne-Smith) की टिप्पणी के साथ अन्य टीकाकारों के भी रोचक योगदान जोड़ सकती थी, जो हव्वा के इस विश्वास पर विचार करते हैं कि कैन ही वह आनेवाला, अर्थात् मसीहा था। विशेष रूप से मूल्यवान हैं बॉन विश्वविद्यालय के डॉ. पीटर लांगे (Dr. Peter Lange) और उनके सम्पादक तथा अनुवादक डॉ. टेलर लुइस (Dr. Tayler Lewis) की टिप्पणियाँ। बाद वाले लिखते हैं: “हव्वा की यह भूल, कि उसने इस अभिव्यक्ति को ऐसे व्यक्ति पर लागू किया जो उद्धारकर्ता की अपेक्षा मसीह-विरोधी का प्रतिरूप अधिक था, हमें, जिन पर वाचा का परमेश्वर एक ऐसे अस्तित्व के रूप में प्रकट हुआ है जो

इतना अलौकिक रूप से भिन्न है, इतना अधिक नहीं चौंकाना चाहिए कि वह पाठ की व्याख्या को प्रभावित करे। हव्वा के ज्ञान की सीमा और शायद ईश्वरीय और मानवीय के बीच उचित भेद करने की उसकी कमी उसकी आशा की तीव्रता और उसकी भाषा की आन्तरिक सच्चाई को और भी अधिक प्रकाश में ला देती है। यदि उस समय के उसके लिपिबद्ध शब्दों में स्त्री के प्रतिज्ञा किए हुए वंश का कोई संकेत न होता, तो बुद्धिवादी निःसन्देह इसे इस बात के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करते कि वह ऐसी किसी भविष्यद्वाणी के विषय में कुछ नहीं जान सकती थी, और इसलिए उत्पत्ति 3:15 और उत्पत्ति 4:1 अवश्य ही अलग-अलग लेखकों द्वारा लिखे गए होंगे, जो एक-दूसरे के विषय में कुछ नहीं जानते थे या एक-दूसरे का खण्डन करते थे।”

83 केवल आदम ही नहीं, बल्कि मुख्य रूप से स्वयं परमेश्वर का वचन कहता है कि हव्वा **“जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता”** थी। डेलिट्ज़ (Delitzsch) इस पर टिप्पणी करते हैं: “प्रतिज्ञा वास्तव में स्त्री के एक वंश की बात करती है। जिस मृत्यु का उसे भय दिखाया गया है, उसके सामने आदम के लिए स्त्री दोनों बातों की निश्चितता है, मानवजाति के बने रहने की भी और उसकी विजय की भी।” इस पहलू पर, कि सब विश्वासी “स्त्री का वंश” हैं, डॉ. मनरो गिब्सन (Dr. Monroe Gibson) यह प्रश्न पूछकर टिप्पणी करते हैं: “उसका वंश कौन है?”, और उत्तर देते हैं: “बहुत-से सतही पाठक सोचते हैं कि उसका वंश पूरी मानवजाति है। निःसन्देह एक अर्थ में पूरी मानवजाति ‘स्त्री का वंश’ है, परन्तु यदि इसमें पूरी मानवजाति सम्मिलित है, तो सर्प के वंश का क्या अर्थ है? क्या यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि ‘स्त्री का वंश’ पूरी मानवजाति का अर्थ नहीं दे सकता, बल्कि केवल उन्हीं का जो न केवल शाब्दिक रूप से, बल्कि आत्मिक रूप से ‘स्त्री का वंश’ हैं, अर्थात् वे जो भलाई के पक्ष में, परमेश्वर और धार्मिकता के पक्ष में खड़े हैं? जो विपरीत आत्मा के हैं, वे सर्प का वंश हैं, ‘शैतान की सन्तान’। इसी प्रकार जब हम पढ़ते हैं, ‘आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता वही हुई’ [3:20], तो अधिकांश पाठक इसे इस अर्थ में समझते हैं कि वह सब मनुष्यों की माता थी। परन्तु वह उसे ऐसा नाम क्यों देता जो इतनी स्पष्ट बात कहता है? दूसरी ओर, यदि ‘जीवितों’ को शाब्दिक के साथ-साथ आत्मिक अर्थ में उन लोगों के रूप में समझा जाए जो ‘परमेश्वर के लिए जीवित’ हैं, जो वह ‘जीवन’ पाएँगे जो परमेश्वर अपने पुत्र के द्वारा देता है, तो सारे संकेत कितनी सुन्दरता से एक साथ मेल खाते हैं! ‘स्त्री का वंश’, ‘जीवितों की माता’, ‘आदम की वंशावली’। ठीक-ठीक कहें तो इब्रानी भाषा में वर्तमान काल का कोई रूप नहीं है, केवल भूतकाल और भविष्यकाल हैं। इसलिए जब भविष्यकाल का प्रयोग होता है, तो वह उस वर्तमान को सूचित कर सकता है जो भविष्य में जारी रहता है। अतः यहाँ केवल ‘मैं बैर उत्पन्न करूँगा’ ही नहीं, बल्कि यह भी लिखा है: मैं तेरे और स्त्री के बीच बैर उत्पन्न करता हूँ। कार्य आरम्भ हो चुका है ... वह उन सब व्यक्तियों का मूल रूप और प्रतिनिधि है जो परमेश्वर की कलीसिया बनाते हैं।” (The Ages before Moses, पृ. 122)।

84 आइए, अब हम उन बहुत-से बाइबल-स्थलों में से चार की तुलना करें जिन्हें मैं चुन सकती थी। परमेश्वर अब्राहम से कहता है (उत्पत्ति 22:16-18): “मैं अपनी ही शपथ खाता हूँ ... पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी, क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।” इसहाक से वह कहता है: “पृथ्वी की सारी जातियाँ तेरे वंश के कारण अपने को धन्य मानेंगी, क्योंकि अब्राहम ने मेरी बात मानी और मेरी विधियों का पालन किया” (उत्पत्ति 26:4-5)। याकूब से भी उसने यही कहा (उत्पत्ति 28:14)। दाऊद से वह कहता है: “तब मैं तेरे बाद तेरे वंश को खड़ा करूँगा ... मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा” (1 इतिहास 17:11-12)। फिर गलातियों 3:29: “और यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।” क्या अब्राहम, इसहाक, याकूब और दाऊद के लिए यह विशेष सम्मान की बात थी कि उनका उल्लेख आशीष की उस धारा के अंग के रूप में किया गया जो मानवजाति पर उतरनेवाली थी? तब यह अच्छा है कि हम स्मरण रखें कि इस आशीष का

स्रोत (मानवीय पक्ष से) हव्वा है, जिसके विषय में परमेश्वर ने शैतान से कहा: “मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; ... इसका वंश ... तेरे सिर को कुचल डालेगा”। यह प्रतिज्ञा हव्वा का भी वैसा ही सम्मान करती है जैसा अब्राहम, इसहाक और याकूब का, और यह सम्मान उसे किसी और कारण से नहीं मिल सकता था सिवाय उसी कारण के जिससे उन्हें मिला, अर्थात् उसमें पाई गई श्रेष्ठता के कारण।

85 अपने अगले पाठ में मैं दिखाऊँगी कि न.नि. यह सिखाता है कि आदम, न कि हव्वा, वह था जो पाप को, और पाप के द्वारा मृत्यु को, संसार में लाया। तो फिर हव्वा के चरित्र की इस निन्दा की व्याख्या कैसे की जाए? इसका उद्गम कहाँ है? मेरे विचार में इन प्रश्नों का उत्तर काफ़ी सरल है। ऐतिहासिक दृष्टि से, स्त्री पर सारी बुराई का स्रोत होने का सबसे पुराना निश्चित आरोप पैंडोरा (Pandora) की अन्यजाति यूनानी पौराणिक कथा है। हेसियोड (Hesiod) के अनुसार, जो लगभग 800 ई.पू. में रहता था, ज्यूपिटर (Jupiter) क्रोधित था, क्योंकि प्रोमैथियस (Prometheus) ने (उसके नाम का अर्थ है “पूर्वदृष्टि”) स्वर्ग से आग चुरा ली थी, और उसने बदला लेने के लिए हेफ़ैस्टस (Hephaistos) को एक सुन्दर स्त्री बनाने की आज्ञा दी। मिनेर्वा (Minerva) ने उसे सब वरदानों से सजाया, और उसका नाम पैंडोरा रखा गया (अर्थ: “सब कुछ से सम्पन्न”), परन्तु मर्करी (Merkur) ने उसे एक छली मन दिया। उसे एपिमैथियस (Epimetheus) (“बाद का विचार”) के पास लाया गया, जिसने चेतावनियों के विपरीत प्रोमैथियस की अनुपस्थिति में उसे स्वीकार कर लिया। जब उसे मनुष्यों के बीच ग्रहण किया गया, तो पैंडोरा ने एक पात्र खोला और मानवजाति की सारी बुराइयों को बाहर निकल जाने दिया, सिवाय छली आशा के। इस मिथक के बहुत-से रूप हैं, परन्तु वे सब एक ही दृष्टिकोण सिखाते हैं: स्त्री मानवीय बुराइयों का स्रोत है।

86 दोनों नियमों के बीच का युग, अर्थात् पु.नि. और न.नि. के बीच का समय, यहूदी इतिहास में एक “मिलावट का समय” था, क्योंकि यहूदी पु.नि. की शिक्षाओं और यहूदियों की प्रथाओं का यूनानी अन्यजाति धर्म के साथ मेल बैठाने का प्रयास कर रहे थे। आर्चडीकन फ़ैरर (Farrar)³ बताते हैं कि “उस समय फ़िलिस्तीन यूनानी नगरों की एक पट्टी से घिरा हुआ था, जिनमें बहुत-से यहूदी अन्यजाति जनता के साथ खुलकर घुलते-मिलते थे। स्वयं यरूशलेम में एक धनी और शक्तिशाली दल बढ़ रहा है, जो सीरिया और मिस्र के यूनानी राजाओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। यूनानी जीवन और यूनानी साहित्य के आकर्षण से मोहित होकर वे यूनानी आदर्शों को अपनाते और यहूदी जीवन तथा विश्वास की सबसे मौलिक विशिष्टताओं को मिटा देना चाहते थे। इस अर्ध-अविश्वासी युग को ‘मिलावट के दिन’ कहा गया है।”

87 इसलिए यह कोई असामान्य बात नहीं है कि इस समय पैंडोरा की कथा और उत्पत्ति में हव्वा के वृत्तान्त का आपस में मेल बैठाने का प्रयास किया गया; और बुराई के स्रोत के रूप में हव्वा का सबसे पुराना उपलब्ध उल्लेख अप्रामाणिक ग्रन्थों (अपोक्रिफ़ा) की उस पुस्तक में मिलता है जो *Ecclesiasticus* या *यीशु बेन सीरा* (Jesus Sirach) के नाम से जानी जाती है। यह पुस्तक, अनिश्चित तिथि की एक फ़िलिस्तीनी रचना, मूल रूप से सम्भवतः लगभग 250 ई.पू. में इब्रानी में लिखी गई थी, परन्तु बहुत पहले ही मिस्र में यूनानी में अनुवाद की गई, और इसमें ये शब्द हैं: “एक स्त्री से पाप का आरम्भ हुआ, और उसी के कारण हम सब मरते हैं।” (25:24)। टेनेन्ट (Tennant) बताते हैं कि “यीशु बेन सीरा पतन के विषय में तलमूदी शिक्षा का अग्रदूत” था।⁴ मैं शीघ्र ही कुछ अंशों के द्वारा दिखाऊँगी कि यह तलमूदी शिक्षा हव्वा के विषय में क्या कहती है, – इसलिए कृपया इस बात को न भूलिए।

“बुराई के स्रोत के रूप में हव्वा का सबसे पुराना उपलब्ध उल्लेख अप्रामाणिक ग्रन्थों की उस पुस्तक में मिलता है जो *Ecclesiasticus* या *यीशु बेन सीरा* के नाम से जानी जाती है।”

बाद के यहूदी लेखक हव्वा के दोष पर और विस्तार से बात करते हैं। विशेष रूप से सिकन्दरिया में पवित्रशास्त्र का यूनानी अन्यजाति शिक्षाओं के साथ मेल बैठाने का प्रयास किया गया। मसीही धर्मविज्ञान की हानि के लिए, सिकन्दरिया में पु.नि. के यूनानी संस्करण के पूरा होने के बाद (आरम्भ 285 ई.पू.), "अपोक्रीफ़ा" कहलानेवाले ये यहूदी, अप्रेरित लेख – जो सब के सब यूनानी में लिखे गए थे, इब्रानी में नहीं – इस संस्करण में सम्मिलित कर लिए गए, जिसका उपयोग कलीसिया इब्रानी पवित्रशास्त्र को छोड़कर करती थी। कलीसियाई पिताओं में से बहुतों ने अपोक्रीफ़ा को प्रामाणिक मानकर उद्धृत किया; और सब उनकी शिक्षाओं से प्रभावित हुए। और इस प्रकार आसानी से ऐसा हो जाता है कि पौराणिक पैडोरा का चरित्र हव्वा पर आरोपित कर दिया जाता है। हव्वा के चरित्र के विषय में कोई भी कथन "मिलावट के दिनों" से और पीछे तक नहीं खोजा जा सकता।

88 सन् 177 ई. में ल्यों (Lyon) के बिशप इरेनियस (Irenaeus) बेन सीरा और अन्य यहूदियों की शिक्षा के अनुरूप हव्वा के विषय में कहते हैं: "क्योंकि वह आज्ञा न माननेवाली बन गई थी, इसलिए वह मृत्यु का कारण बना दी गई, स्वयं अपने लिए भी और सम्पूर्ण मानवजाति के लिए भी।" परन्तु कुछ वर्ष बाद कार्थेज के टर्टुलियन (Tertullian) विशेष रूप से कठोर हैं; वे हव्वा के पाप का दण्ड सब मसीही स्त्रियों पर डालते हैं, इन शब्दों के साथ: "और क्या तू नहीं जानना चाहती थी कि तू एक हव्वा है? तेरे लिंग पर परमेश्वर का दण्डादेश इस संसार में अब भी जीवित है; तो तेरा दोष भी अब तक जीवित होना चाहिए। **तू ही है जिसने शैतान के लिए प्रवेश का द्वार खोला**, तू ने उस वृक्ष की मुहर तोड़ी, तू ने सबसे पहले ईश्वरीय व्यवस्था को त्याग दिया, तू ही है जिसने उसे भी बहका लिया जिसके निकट शैतान पहुँच न सका। इतनी आसानी से तू ने पुरुष को, परमेश्वर के स्वरूप को, धूल में गिरा दिया। तेरे दोष के कारण, अर्थात् मृत्यु के कारण, परमेश्वर के पुत्र को भी मरना पड़ा।" परन्तु क्या मानवजाति ने, स्त्री के बिना, कभी यह देखा होता कि परमेश्वर का पुत्र मरने के लिए या पुरुषों को प्रचार करने के लिए संसार में आता है?

89 हमारे समय के बहुत-से धर्मवैज्ञानिक विचार टर्टुलियन के गढ़नेवाले हाथ की गवाही देते हैं, क्योंकि, Lippincott's Biographical Dictionary के संक्षिप्त कथन का प्रयोग करें तो: "उसने अपने समय के मसीहियों के बीच बड़ा प्रभाव प्राप्त किया।" उसकी साहित्यिक रचनाओं में से बहुत-सी आज तक बची हुई हैं। जब कोई स्त्री के विषय में ऐसे दृष्टिकोण से आरम्भ करता है (कि स्त्री स्थायी 'दोष' के कारण मसीह के प्रायश्चित्त-बलिदान के गुणों में भागी होने से वंचित है), तो कोई आश्चर्य नहीं कि अगला बाइबल-स्थल, जिस पर हम विचार करेंगे (उत्पत्ति 3:16), तलमूद और टर्टुलियन की शिक्षा के अनुरूप सम्पूर्ण स्त्री-जाति पर परमेश्वर के अनन्त शाप के रूप में समझा गया।

पाठ 46 – पौलुस के तर्क के लिए अनावश्यक क्षमा-याचनाएँ

346 तो इस दृष्टिकोण का हमारे पास क्या विकल्प है कि पौलुस एक बड़े संकट के लिए उपयुक्त परामर्श देता है – और कि वह स्त्री के स्थायी मौन और अधीनता का समर्थन **नहीं** करता? टीकाकारों के अनुसार बात इस कथन पर आकर टिकती है कि वह प्रेरित, जिसने एक ओर यहूदीवादियों की "यहूदी कथा-कहानियों" का विरोध करने में इतना समय लगाया, दूसरी ओर स्वयं इसी विचारधारा से बहुत गहराई से प्रभावित था, – क्योंकि यदि हम इस निष्कर्ष पर न पहुँचें कि **दूसरों** ने पौलुस की शिक्षा में स्वार्थपूर्ण कुतर्क मिला दिया है, तो यह प्रस्तुति अनिवार्य हो जाती है कि पौलुस यहाँ खुलकर अविश्वसनीय यहूदी कुतर्क का सहारा लेता है। उदाहरण के लिए, कैल्विन (Calvin) इस तर्क के विषय में, कि "आदम पहले रचा गया", लिखते हैं: "परन्तु जो कारण पौलुस इसके लिए देता है, अर्थात् यह कि सृष्टि की व्यवस्था में स्त्री दूसरे स्थान पर थी, वह उसकी अधीनता के पक्ष में बहुत प्रबल तर्क

प्रतीत नहीं होता, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला समय के क्रम में मसीह से पहले था, फिर भी पद में उससे बहुत छोटा था”, – और कैल्विन यह भी जोड़ सकते थे: “हर पुरुष की एक माँ होती है जो उससे पहले बनाई गई थी, और फिर भी उसे छोटा समझा जाता है।” या, यदि पौलुस मूल सृष्टि-कार्य की ओर संकेत कर रहा था: “गायें पुरुषों से पहले बनाई गई – धर्मविज्ञानियों से भी पहले, – इसलिए पुरुषों को गायों के अधीन रहना चाहिए।” जहाँ तक मेरी बात है, मैं यह मानने को अधिक तैयार हूँ कि टीकाकार ने अयोग्य कुतर्क का प्रयोग किया है, बजाय यह विश्वास करने के कि पौलुस ने ऐसा किया।

347 यदि हम इस मत को मानें कि पौलुस रब्बियों की शिक्षाएँ थोपता है, तो, जैसा कालिश (Kalisch) लिखते हैं, “नया नियम ... पुराने से भी अधिक कठोर है; क्योंकि जहाँ वह स्त्री को आज्ञा देता है कि वह ‘चुपचाप पूरी अधीनता में सीखे, परन्तु न शिक्षा दे और न पुरुष पर अधिकार जताए, बल्कि चुप रहे’, वहाँ पुराने नियम में उसे सबसे ऊँचे शिक्षण-पद, अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं के पद, तक पहुँचने दिया गया था, जैसे मरियम, दबोरा और हुल्दा।” परन्तु मैं यह मानना अधिक पसन्द करूँगी कि टीकाकार भूल कर रहा है, बजाय यह मानने के कि “सुसमाचार” – “शुभ समाचार” – शब्द स्त्रियों के लिए ऐसे उत्पीड़न की घोषणा करता है जैसा पुराने नियम की व्यवस्था के अनुसार भी उन पर नहीं थोपा गया था।

348 कभी-कभी टीकाकार, पौलुस के निर्देशों से तो सन्तुष्ट, परन्तु उसकी **तर्क-शैली** से असहज होकर, पौलुस की ओर से क्षमा माँगने का प्रयास करता है। प्रोफ़ेसर रेनॉल्ड्स (Reynolds) पद 13 के विषय में कहते हैं: “जब इस तर्क का प्रयोग बौद्धिक श्रेष्ठता के स्त्री-सुलभ दावे को अस्वीकार करने के लिए किया जाता है, तो यह हमारे कानों को दूर की कौड़ी लग सकता है। परन्तु उस समय यह एक प्रचलित पद्धति थी कि लगभग सभी दार्शनिक विचारों की ठोस अभिव्यक्ति पवित्रशास्त्र में खोजी और पाई जाए।” यह बहुत बुद्धिमानी की बात लगती है। परन्तु मैं यह मानने की अभ्यस्त हूँ कि पवित्र आत्मा ने पौलुस के लेखों को प्रेरित किया; और मैं यह नहीं मानती कि आत्मा को स्त्रियों के मौन और अधीनता का कारण ठहराने के लिए रब्बियों की बेतुकी बातों का अध्ययन करने की आवश्यकता थी। उचित कारणों की कमी सचमुच घातक रही होगी, यदि पौलुस को ऐसे तर्कों से सन्तोष करना पड़ा जैसे यहाँ उसके नाम पर मढ़े जाते हैं।

349 वह प्रेरित, जिसने प्रबल तर्क के साथ रोमियों की पत्री लिखी, और जिसने इब्रानियों की पत्री के स्पष्ट तर्क या तो स्वयं लिखे या उसके लेखक का शिक्षक था, उसे स्त्रियों को चुप कराने का बहाना ढूँढ़ने के लिए उस बात का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं थी जिसे वह स्वयं तिरस्कार के साथ “यहूदी कथा-कहानियाँ” कहता था – और जिनसे बचने की चेतावनी उसने तीमुथियुस को दी थी। यदि वह उन्हें चुप कराना चाहता, तो उसके पास इसका कोई **ईमानदार** कारण होता, और वह उस कारण को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त भाषा पा सकता था। उन लोगों पर एक भारी उत्तरदायित्व है जो पौलुस के लिए लचर क्षमा-याचनाओं के द्वारा कुतर्कों को बनाए रखने का प्रयास करके पौलुस को उपहास का और बाइबल को उसके मूल्य के विषय में अविश्वास का पात्र बना देते हैं। मैं एक क्षण के लिए भी यह स्वीकार नहीं करूँगी कि प्रेरित को, या सामान्य रूप से बाइबल को, किसी क्षमा-याचना की आवश्यकता है। ज्यों ही टीकाकार स्वार्थपूर्ण और पहले से तय निष्कर्षों को सिद्ध करने का प्रयास छोड़ने को तैयार होंगे, पौलुस के शब्द पूरी तरह स्पष्ट और मसीही अर्थ में सुसंगत हो जाएँगे। मैंने दिखाया है कि पौलुस ने स्त्री को पुरुष के अधीन रखने के पक्ष में तर्क नहीं दिया; न ही इस बात के पक्ष में कि हव्वा आदम से अधिक दोषी थी। उसने केवल कलीसिया में स्त्रियों के लिए एक अस्थायी “शान्ति” की सलाह दी, क्योंकि प्रतिकूल परिस्थितियों में कलीसिया और स्त्री के लिए एक विशेष खतरा था। नीरो के सताव चल रहे थे, और मसीही स्त्रियों का सतीत्व खतरे में था।

“यदि पौलुस स्त्रियों को चुप कराना चाहता, तो वह इसका कोई ईमानदार कारण बताता, और उस कारण को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त भाषा पा लेता।”

350 फिर भी प्रोफ़ेसर रैमज़े (Ramsay) इस निष्कर्ष पर अड़े रहते हैं कि पौलुस सब स्त्रियों को सदा के लिए चुप और अधीन कराना चाहता था, और (The Expositor, 1909 में) इस स्थल पर पौलुस की भाषा को कहते हैं

“... इस बात का एक विचित्र उदाहरण कि यहूदी सामान्यतः पवित्रशास्त्र से किस प्रकार तर्क निकालते थे और अपने मतों का समर्थन करने के लिए उसके शब्दों को तोड़ते-मरोड़ते और यातना देते थे। जहाँ पौलुस कोई ऐसा सत्य व्यक्त करता है जिसे वह प्रत्यक्ष और अचूक अन्तर्ज्ञान से स्पष्ट देखता है, वहाँ भी वह कभी-कभी पुराने नियम से ऐसे तर्क लाता है जो हमें बहुत घुमावदार और तर्क के रूप में काफ़ी निरर्थक लगते हैं। यहूदी चिन्तन हमसे बिल्कुल भिन्न ढंग से तर्क करता था; और अपनी तर्क-रेखा के कारण वह हमें अक्सर अटपटा लगता है। परन्तु हमें मत की सच्चाई को तर्क की वैधता के बराबर नहीं ठहराना चाहिए, न इस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि क्योंकि तर्क इतना कम विश्वसनीय है, इसलिए मत असत्य है। तदनुसार हम आदम और हव्वा के आचरण से निकलनेवाले तर्क को अपनी सोच के लिए अरुचिकर और अपने लिए कठिनाई से समझ में आनेवाला मानकर एक ओर रख सकते हैं। और जहाँ तक वह समझ में आता है, वहाँ तक वह आधुनिक पाठकों की दृष्टि में पौलुस के उद्देश्य को दृढ़ नहीं कर सकता। परन्तु उसका उद्देश्य तर्क से पूरी तरह स्वतन्त्र है।”

351 मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि “आधुनिक पाठकों की दृष्टि में” स्त्रियों की अधीनता और मौन का उद्देश्य उस तर्क से दृढ़ नहीं हुआ है जो पौलुस के नाम पर मढ़ा जाता है, क्योंकि अब मुझे आशा होती है कि टीकाकार शीघ्र ही पहचान लेगा कि ऐसा दुर्बल तर्क पौलुस का है ही नहीं, बल्कि पौलुस के शब्दों को बिगाड़नेवालों का काम है। पौलुस ने पवित्रशास्त्र को नहीं मरोड़ा, बल्कि मनुष्यों ने पौलुस के तर्कों को मरोड़कर पवित्रशास्त्र के साथ उनके मेल से बाहर कर दिया है। परन्तु आशा है, जब व्याख्याकार एक बार भाषा में इस मरोड़ को पहचानना आरम्भ कर दें। प्रोफ़ेसर रैमज़े मानते हैं कि पौलुस का तर्क बुरा है, परन्तु बुरे तर्क से निकाला गया उसका निष्कर्ष सत्य है। परन्तु बुरा पेड़ अच्छा फल नहीं ला सकता। ज्यों ही यह पहचान लिया जाए कि स्त्री पर पुरुष का प्रभुत्व उस सम्पत्ति के समान है जो दोषपूर्ण स्वामित्व-पत्र के द्वारा प्राप्त की गई हो, तो पुरुष अपने दोषी विवेक के विरुद्ध लड़ नहीं सकते; और स्त्री के पक्ष में परमेश्वर है। इससे हम यह निष्कर्ष निकालते हैं: दोनों सम्भावनाओं में से – या तो (1) यह मानना कि पौलुस किसी बिल्कुल और बात के पक्ष में तर्क दे रहा था, या (2) यह दावा करना कि पौलुस ने (स्त्री के मौन और अधीनता के पक्ष में) पवित्रशास्त्र को मरोड़कर बेईमानी से तर्क दिया – पौलुस के प्रति कहीं अधिक आदरपूर्ण और परमेश्वर तथा उसके वचन के प्रति कहीं अधिक श्रद्धापूर्ण यह है कि हम दूसरे दृष्टिकोण को अस्वीकार करें और पहले को स्वीकार करें।

352 मैंने दिखाया है कि स्त्रियों के विषय में तीमुथियुस से कहे गए पौलुस के शब्दों में एक सुसंगत, उचित अर्थ पाया जा सकता है, इस धारणा के बिल्कुल विपरीत कि वह रब्बियों के कुतर्क को आगे बढ़ाता है। परन्तु प्रोफ़ेसर रैमज़े, ऐसे ही अन्य मतों को उद्धृत न करें तो, पौलुस पर एक “घुमावदार, विचित्र तर्क-शैली” का आरोप लगाते हैं, ताकि उस शिक्षा का समर्थन करें (जो रब्बीवाद से ली गई है) कि स्त्री पुरुष के अधीन है। कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि तीमुथियुस के इस पाठ की सहायता से ऐसी शिक्षा को लागू करने के लिए एक घुमावदार, विचित्र तर्क-शैली अपनाई गई है। यह स्पष्ट है। परन्तु मैं इस बात से इनकार करती हूँ कि परमेश्वर के वचन के बिगाड़े जाने का दोष पौलुस का है। मैं यह दोष आरम्भिक कलीसिया के भीतर के “यहूदीवादियों” में देखती हूँ;

और पुरुष टीकाकारों ने (शायद अनजाने) स्वार्थपूर्ण कारणों से “यहूदीवादियों” के इस पहले से तैयार, घुमावदार, विचित्र तर्क को अपना लिया है, जिनके हानिकारक प्रभाव से पौलुस स्वयं अपनी पूरी सेवकाई में प्रतिदिन कलीसिया की रक्षा के लिए लड़ता रहा। उसने उनके विषय में इस प्रकार चेतावनी और भविष्यद्वाणी की: **“मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आएँगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे”** (प्रेरितों के काम 20:29)। उसने अपनी कई पत्रियों में अनगिनत बार उनकी और उनकी शिक्षाओं की निन्दा की; और पौलुस के बाद पतरस ने मसीहियों को उन लोगों से सावधान किया जो पौलुस की पत्रियों के शब्दों को “अपने ही नाश के लिए खींच-तानकर” मरोड़ते हैं (2 पतरस 3:15-16)।

353 पौलुस 2 कुरिन्थियों 4:1-2 में अपने विषय में कहता है: **“इसलिये जब हमें यह सेवा मिली है, ... परन्तु [हम ने] लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं।”** इसलिए इस दृष्टिकोण को स्वीकार करने के लिए कि पौलुस उस “घुमावदार, विचित्र तर्क” में पड़ गया जो उन दिनों के “यहूदीवादियों” की पहचान था, हमें इससे कहीं अधिक मानना होगा कि पौलुस “पवित्रशास्त्र की भाषा को तोड़ता-मरोड़ता और यातना देता है” (प्रोफ़ेसर रैमज़े के शब्दों का प्रयोग करें तो)। हमें यह मानना होगा कि पवित्र आत्मा, जिसने पौलुस के लेखों को प्रेरित किया, एक झूठी आत्मा के आगे हट गया, और कि पौलुस जब उसने अपने विषय में यह कथन लिखा, तब ईमानदार नहीं था; परन्तु पौलुस के विषय में मेरी ऐसी राय नहीं है।

पाठ 47 – पति के सिर होने के विषय में अन्तिम टिप्पणियाँ

354 तो यदि पति के सिर होने का अर्थ पुरुष का प्रभुत्व नहीं है, तो पत्नी से अपने पति के “अधीन रहने” को क्यों कहा गया है, और पति से अपनी पत्नी के अधीन रहने को क्यों नहीं? क्योंकि “अधीनता” शब्द का वास्तविक अर्थ दासता से नहीं, बल्कि मेल-मिलाप से सम्बन्ध रखता है। जहाँ अन्याय होता है या उसकी आशंका होती है, वहाँ मसीही रीति सदा यही रही है कि जिसके साथ अन्याय हो रहा है उसे यह उपदेश दिया जाए कि वह, यदि सम्भव हो, तब तक मेल बनाए रखने का प्रयत्न करे जब तक अन्याय करनेवाला समझ न जाए। इस विषय पर 1 पतरस 2:18-23 पढ़िए: 3:1 की ओर होनेवाले संक्रमण पर ध्यान दीजिए, विशेषकर “इसी प्रकार” शब्द पर। जिस “अधीनता” की माँग की गई है, वह एक हठीले, अविश्वासी पति से सम्बन्धित है। इसी प्रकार प्रेरित पौलुस इफिसियों 5 में पत्नी को, जो सम्भवतः अधिक अन्याय सहती है, कर्तव्यों की एक शृंखला का उपदेश देता है जो “अधीनता” शब्द में संक्षेपित है, और पुरुष को कर्तव्यों की एक दूसरी शृंखला का, क्योंकि वही है जो उत्पीड़न की ओर अधिक झुकता है। पति को वह प्रेम दिखाना है जो दूसरे की भलाई के लिए अपने आप को दे देता है।

355 परन्तु टीकाकार पौलुस के उस **उद्देश्य** को गलत समझता है जिसके साथ वह “अधीनता” शब्द का प्रयोग करता है। इसे इस प्रकार समझाया जा सकता है: चीन में माताएँ सदियों से अपनी बेटियों को विवाह-बाज़ार के लिए तैयार करने हेतु उनके पैर बाँधने को विवश महसूस करती आई हैं। यह प्रथा अब मसीही धर्म के मानवीय प्रभावों के आगे हट रही है, और माताएँ अपने परिवार के पुरुषों के समर्थन से अपनी बेटियों के पैर बाँधने से इनकार करती हैं और अक्सर अपने ही पैरों की पट्टियाँ खोल देती हैं। परन्तु स्वतन्त्र पैर रखना उस बेटे के लिए, जिसके पैर **कभी** बाँधे ही नहीं गए, **एक** बात है, और उस माँ के लिए, जिसके पैर **वर्षों से बाँधे** हैं, बिल्कुल दूसरी बात। इसका कारण यह है कि वही पट्टियाँ, जिन्होंने पैरों को इतना दुर्बल और विकृत कर दिया, समय के साथ उन दुर्बल अंगों के लिए एक **आवश्यक सहारा** बन गई हैं; इसलिए मिशनरी डॉक्टर को, जब वह चीनी माँ के पैर खोलती है, पुरानी पट्टियाँ उतारनी पड़ती हैं और फिर **नई पट्टियाँ लगानी पड़ती हैं**, – इस बार हर एक अंगुली को

उसकी अपनी अलग खपच्ची से बाँधकर, – केवल तब तक, जब तक पैर को हर प्रकार के सहारे से मुक्त न किया जा सके।

356 यह दूसरी क्रिया भी बाँधने की ही क्रिया है, परन्तु यह मूल पैर-बन्धन के **विपरीत उद्देश्य** से की जाती है। इसका सम्बन्ध खोई हुई स्वतन्त्रता की पुनःस्थापना से है, जबकि पुरानी क्रिया आक्रामक और प्रहारक ढंग से स्वतन्त्रता छीनती थी। इसके अतिरिक्त यह स्वभावतः ऐसी क्रिया है जो उस लड़की के लिए बिल्कुल अनुपयुक्त है जिसके पैर कभी बाँधे नहीं गए। तो क्या डॉक्टर द्वारा किए गए इस **अस्थायी उपचार** के कारण, जिसका लक्ष्य पूर्ण स्वतन्त्रता है, यह मान लेना न्यायसंगत या सत्य होगा कि डॉक्टर पैर-बन्धन को लाभदायक समझती है? परन्तु ठीक इसी अर्थ में पौलुस को उन लोगों ने गलत समझा है जो पुरुष के प्रभुत्व को उचित ठहराना चाहते हैं। वे पौलुस के घोषित उद्देश्य की उपेक्षा करते हैं; वे अन्य स्थानों पर **“परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतन्त्रता”** के विषय में उसके स्पष्ट कथनों के सामने चुप रहते हैं; वे उन चेतावनियों का तिरस्कार करते हैं जिनसे पौलुस अपने शब्दों की रक्षा करता है, और उनके अर्थ को मरोड़ देते हैं।

357 **“अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी”** जैसे कथन उनकी समझ में बहुत कम अधिकार रखते हैं; परन्तु क्योंकि पौलुस ने स्त्री को दो बार स्मरण दिलाया है कि उसका पति उसका **“सिर”** है (**“सहारा”**, देखिए खण्ड 282), इसलिए ये व्याख्याकार उत्पीड़न के उन बोझों को, जिन्हें पौलुस उनकी झुकी हुई पीठ से उतारना चाहता था, स्त्रियों पर स्थायी रूप से फिर से लाद देना चाहते हैं। प्रेरित के उद्देश्य की इस गलत प्रस्तुति ने बहुत-से लोगों को बाइबल और पौलुस का अनादरपूर्वक उपहास करने के लिए प्रेरित किया है; और इसका उत्तरदायित्व उन पर है जिन्होंने पौलुस के अभिप्राय को बिगाड़ा। पौलुस किसी **“बूढ़े कुँवारे”** के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में बोलता है। न ही वह रब्बियों की शिक्षा के विषैले प्रभाव में काम करता है। पौलुस पवित्र आत्मा के प्रभाव में बोलता है, और जो उसे सही रूप से समझना चाहते हैं, वे आत्मा की सहायता से उसे आसानी से समझ सकते हैं। उसके शब्दों की हर दूसरी प्रस्तुति अनादरपूर्ण है।

358 प्रेरित, जो एक अन्यजाति सरकार के अधीन और स्त्रियों के लिए अन्यायपूर्ण नागरिक कानूनों के अधीन कठिनाइयों को पहचानता है, अब पहले यह स्पष्ट करता है कि कलीसिया के भीतर उत्पीड़न की पट्टियाँ हटानी होंगी, परन्तु विवाह के बन्धन को सावधानी से सुरक्षित रखना होगा (**“विवाह सब बातों में आदर की बात समझी जाए।”**); पत्नियों को धीरज रखना है; और पतियों को, इसी चित्र में बने रहें तो, मानो हर टूटी और कुचली हुई स्त्री के लिए अलग-अलग खपच्चियों का काम करना है। मसीही प्रेम की क्रान्तिकारी नैतिकता शीघ्र ही बाकी सब कुछ पूरा कर देती। अपने स्वामी के समान पौलुस भी अपने सुसमाचार के द्वारा **“बन्दियों को छुटकारे का प्रचार करने”** आया था, – बन्दियों के लिए बन्धुआई की घोषणा करने नहीं। स्त्रियों के लिए, ठीक वैसे ही जैसे पुरुषों के लिए, पौलुस का लक्ष्य **“परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतन्त्रता”** है, और वह इसे अनेक प्रकार से बार-बार स्पष्ट करता है; और जब स्त्रियाँ एक बार इस लक्ष्य तक पहुँच जाएँ, तो **पद्धति** पुरानी और अर्थहीन हो जाती है। मसीही देशों में, सच्चे मसीही घरों में, पत्नी को अपने पति के **“अधीन रहने”** के विशेष निर्देश अनुचित हैं, – पद्धति अपना काम पूरा कर चुकी है; उत्पीड़न लुप्त हो गया है; स्वतन्त्रता स्थापित हो गई है।

359 अब आइए, इफिसियों 5, पद 22 को देखें: **“हे पत्नियो, अपने अपने पति के [अधीन रहो], जैसे प्रभु के।”** पहले इस बात पर ध्यान दीजिए कि कोष्ठक में दिए गए शब्द मूल पाठ में नहीं हैं। पत्नियों पर वही दायित्व रखा गया है जो पद 21 में पहले ही सब मसीहियों पर रखा गया है, और इसका अर्थ पत्नी के कर्तव्यों को किसी अनिश्चित सीमा तक फैलाना नहीं, बल्कि उन्हें सीमित करना है। यह रूप कुलुस्सियों 3:18 से मेल खाता है, जहाँ हम कर्तव्यों की यही सूची पाते हैं: **“... जैसा प्रभु में उचित है”**। पौलुस के लिए अधीनता **“उचित”** की सीमा को पार कर सकती थी।

क्योंकि जब झूठे भाई उसके पास आए और उसे बुरी सलाह दी, तो उसने घोषणा की: “उनके अधीन होना हम ने एक घड़ी भर भी न माना।” हाँ, यह प्रेरित, जिसने सब विश्वासियों को “एक दूसरे के अधीन” रहने की शिक्षा दी, जैसे पतरस ने भी दी (1 पतरस 5:5), पतरस के विषय में भी कहता है: मैं ने “उसके मुँह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह अपने आचरण के कारण दोषी ठहरा था” (गलातियों 2:3-5,11)। किसी दूसरे के प्रति बिना शर्त अधीनता बाइबल ने न कभी पुरुष मसीही पर रखी है, न स्त्री मसीही पर।

“किसी दूसरे के प्रति बिना शर्त अधीनता बाइबल ने न कभी पुरुष मसीही पर रखी है, न स्त्री मसीही पर।”

360 कवि जॉन मिल्टन (John Milton) स्त्रियों के लिए प्रेरित पौलुस से बिल्कुल भिन्न शिक्षा देते हैं:

“To whom thus Eve, with perfect beauty adorn’d:

‘My author and disposer, what thou bidd’st

Unargued I obey: so God ordains;

God is thy law, thou mine; to know no more

Is woman’s happiest knowledge, and her praise.”

[जिससे हव्वा, पूर्ण सौन्दर्य से सुसज्जित, यों कहती है:

‘मेरे रचयिता और स्वामी, जो तू आज्ञा देता है,

बिना विवाद मैं उसे मानती हूँ: परमेश्वर ने यही ठहराया है;

परमेश्वर तेरी व्यवस्था है, तू मेरी; इससे अधिक न जानना

स्त्री का सबसे सुखद ज्ञान है, और उसकी प्रशंसा।’]

ऐसी शिक्षा पुरुष को परमेश्वर के स्थान पर बैठा देती है। यह उस मसीह-विरोधी की आत्मा है, जो “परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है” (2 थिस्सलुनीकियों 2:4)। यह स्त्री को भी परमेश्वर की दृष्टि में सबसे घृणित पाप, अर्थात् मूर्तिपूजा, सिखाती है।

361 यदि प्रेरित पतियों पर, पति होने के नाते, विशेष रूप से “अधीनता” नहीं रखता, तो इसका कारण यह है कि उसके पास पति को और भी अधिक महत्वपूर्ण कर्तव्य सौंपने का कारण है। इफिसियों की पत्नी के इस खण्ड के पद 23 में वह उससे कहता है कि उसे, अपने प्रभु के समान, अपनी पत्नी के लिए “देह का उद्धारकर्ता” होना है। पौलुस कितना चाहता है कि वह स्वतन्त्र और निर्दोष रहे! पद 25 मसीह के आदर्श के अनुसार उसके लिए पूर्ण आत्म-त्याग की शिक्षा देता है। पद 26: अपनी शुद्ध और पवित्र की गई शारीरिक प्रकृति के द्वारा अपनी पत्नी की देह को “शुद्ध करके पवित्र बनाए”, ताकि अन्त में उसे “बिना कलंक और झुर्री के” (पद 27) मसीह के सामने प्रस्तुत कर सके, – अपने आचरण से होनेवाली हर नैतिक हानि से मुक्त। पद 28 उसे सिखाता है कि वह अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम रखे जैसा अपनी देह से, अर्थात् उसका पालन-पोषण करे और उसकी देखभाल करे। इसके विपरीत आचरण – कामवासना के द्वारा उत्पीड़न – उससे घृणा करना है। पद 31: वह (न कि वह स्त्री) सबको छोड़कर केवल उसी से मिला रहे (देखिए खण्ड 45-64)।

362 मसीही कलीसिया में स्त्री की एकमात्र शताब्दी प्रेरितों का युग और उससे कुछ आगे का समय थी। प्रोफ़ेसर रैमज़े (Ramsay) अपनी मूल्यवान पुस्तक *The Church in the Roman Empire* में लिखते हैं:

“मसीहियत का सार्वभौमिक और कैथोलिक रूप स्त्री के महत्व और सार्वजनिक सेवा के प्रति अपनी अरुचि में दृढ़ होता गया। अरुचि घृणा बन गई, और इस बात की सम्भावना है कि यह अरुचि पहली शताब्दी तक पीछे जाती है और दूसरी शताब्दी के मध्य से पहले बढ़कर घृणा बन गई।”

इस घृणा के बढ़ने के साथ हम निश्चित हो सकते हैं कि स्त्रियों के मौन और अधीनता का औचित्य खोजने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किया जाता; और “यहूदीवादी” यह पद्धति देने के लिए तैयार खड़ा था कि तोड़-मरोड़ और ऐंठन के द्वारा पवित्रशास्त्र से, विशेषकर पौलुस के शब्दों से, ऐसी बात सिखवाई जाए। यहाँ थोड़े शब्दों में हमारे सामने उस “घुमावदार, विचित्र तर्क” का इतिहास है, जो पौलुस द्वारा प्रस्तुत तर्कों से दिखावटी निष्कर्ष निकालना सम्भव बनाता है; ऐसे तर्क, जो सही रूप से पढ़े जाएँ और निष्पक्ष मन से समझे जाएँ, तो प्रेरित पौलुस और “स्त्री-प्रश्न” के विषय में उसकी शिक्षा का बिल्कुल भिन्न मूल्यांकन कराएँगे।

“मसीही कलीसिया में स्त्री की एकमात्र शताब्दी प्रेरितों का युग और उससे कुछ आगे का समय थी।”

पाठ 66 – एक मसीही परिवार की स्थापना

519 पुराने नियम के सामान्य रूप से प्रचलित कालक्रम (अशर (Usher) के कालक्रम) के अनुसार अब्राहम का जन्म 1996 ई.पू. में हुआ, और सारा उससे दस वर्ष छोटी थी (उत्पत्ति 17:17)। इस प्रकार विश्वास का यह घराना मसीह से लगभग उतना ही पहले रहता था जितना हम मसीह के बाद रहते हैं। यही कालक्रम हव्वा के समय को, जब विजयी वंश की प्रतिज्ञा दी गई, 4004 ई.पू. में रखता है, और इस प्रकार अब्राहम और सारा के समय को इस स्मरणीय प्रतिज्ञा और स्त्री के वंश के जन्म के लगभग बीच में आँकता है।

520 हव्वा के समय से अब्राहम तक (जिसे आरम्भ में **अब्राम** कहा जाता था) परमेश्वर ने स्पष्टतः पुरुष के वंश को आनेवाले मसीहा की वंश-परम्परा में भागीदार के रूप में ध्यान में नहीं रखा था। इस बीच मानवजाति ने, कम से कम संसार के उस भाग में, मातृवंश के द्वारा सन्तान की गणना समाप्त कर दी थी; और बहुत कुछ, जो आरम्भिक काल की स्त्री-गरिमा की पहचान था, लुप्त हो गया। फिर भी किसी न किसी पद्धति से आनेवाले मसीहा का पता दर्ज करना आवश्यक था – इस सामान्य कथन के अतिरिक्त कि वह स्त्री का वंश होगा; और अब उस जाति के विषय में प्रकाश फूटने लगता है जिसका वह प्रकट होने पर अंग होगा। साथ ही परमेश्वर का उद्देश्य था कि इस जाति को उसे ग्रहण करने के लिए तैयार करे।

521 अब्राहम और उसकी पत्नी सारा को उनके मूर्तिपूजक सम्बन्धियों से दूर चले जाने के लिए बुलाया गया (उत्पत्ति 12:1-5; यहोशू 24:2-3)। कनान पहुँचने पर परमेश्वर ने उनकी धार्मिक शिक्षा आरम्भ की, ताकि उनकी आशाओं को एक ऊँचे स्तर पर ले जाए और उन्हें उनकी भावी सन्तान से जोड़ दे। हम भला करेंगे यदि हम एक भूतपूर्व अन्यजाति परिवार की इस तैयारी का, जो सब युगों के लिए सच्चे विश्वास के सब घरानों का मुखिया बना, ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। इस परिवार को निःसंकोच पहला मसीही परिवार कहा जा सकता है, क्योंकि उसे एक आनेवाले मसीह पर विश्वास करना सिखाया गया था (जैसे हव्वा ने किया था), – ठीक वैसे ही जैसे हम एक ऐसे मसीह पर विश्वास करते हैं जो आ चुका है और फिर आएगा।

522 हमने अक्सर देखा है कि वे बहुत ऊँची इमारतें कैसे खड़ी की जाती हैं जो अमेरिका के बड़े नगरों में इतनी अधिक हैं और जो आज समुद्र के दोनों ओर अधिकाधिक दिखाई देने लगी हैं। उनकी बनावट छोटी इमारतों से बिल्कुल भिन्न होती है। पहले, गहरी और मज़बूत नींव के लिए स्थान बनाने हेतु कहीं अधिक मिट्टी खोदी जाती है; फिर हर शहतीर और कड़ी लोहे की होती है, पुल-निर्माण की रीति से अच्छी तरह रिफ़्ट की हुई। परमेश्वर विश्वास

के पहले घराने को सब युगों के मसीही घरों के आदर्श के रूप में स्थापित करना और खड़ा करना चाहता था। उसने गहरा खोदा, अपने बड़े-बड़े नींव के पत्थर दृढ़ता से रखे, और अपनी इमारत की सब कड़ियों को अच्छी तरह आपस में जोड़ दिया। आइए, हम जाँचें कि उसने कैसे काम किया।

523 परमेश्वर अब्राहम से आकाश के तारों के समान असंख्य सन्तान की प्रतिज्ञा करता है, और साथ ही सारा को एक भी बच्चा जनने नहीं देता। अब्राहम को पिता बनने के लिए तैयार करने में उसे सौ वर्ष लगे, और सारा को मातृत्व के योग्य बनाने में नब्बे वर्ष। **“दुष्ट भूसी के समान हैं, जो पवन से उड़ाई जाती है”,** परमेश्वर कहता है, और **“जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है।”** एक प्रतिष्ठित परिवार की नींव कोरी भूसी पर नहीं रखी जाती। बाइबल हमें सिखाती है: जब परमेश्वर बहुत-सी सन्तान चाहता है, तो वह सन्तान उत्पन्न करने के प्रबन्ध को अपने ही नियन्त्रण में रखता है। सब कुछ गुणवत्ता पर निर्भर है; इश्माएलियों या पलिशतियों का एक बड़ा परिवार संसार के लिए आशीष नहीं है; और ऐसा परिवार वैसे भी थोड़े ही समय टिकता है; दुराचार, अपराध और युद्ध उसे शीघ्र ही विनाश के कगार पर ले आते हैं।

524 **“अब्राम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी”** (उत्पत्ति 16:1)। एक ओर **“पृथ्वी की धूल के किनकों के समान”** (उत्पत्ति 13:16) असंख्य वंश की प्रतिज्ञा थी, दूसरी ओर एक बाँझ स्त्री। इसका क्या अर्थ था? ठीक यही: परमेश्वर के यहाँ गुणवत्ता ही सब कुछ है, चाहे परिमाण ही वांछित लक्ष्य क्यों न हो। सम्भवतः अब्राहम के मन में पहले सारा की सुन्दरता का इन्द्रिय-सुख ही सबसे आगे था (उत्पत्ति 12:11-14), जिसके पीछे शरीर की वह लालसा छिपी थी जिसने अन्यजाति अब्राम को अपनी सौतेली बहन से विवाह करने तक पहुँचाया था; फिर इसमें भविष्य की ओर एक दृष्टि मिल गई, जो परमेश्वर के मार्गदर्शन और प्रतिज्ञाओं से प्रेरित थी, और अब्राहम एक ऐसा उत्तराधिकारी चाहने लगा जिसके लिए वह अर्जित धन छोड़ सके और जो उसके नाम को अमर बनाए (उत्पत्ति 13:2; 15:3)। फिर परमेश्वर ने उसकी लालसाओं को कनान से अधिक सुन्दर लोकों की ओर ऊपर उठाया – **“उस स्थिर नींववाले नगर”** की ओर, **“जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है”** (इब्रानियों 11:10), और अन्त में, जब उसका शरीर सब इन्द्रिय-लालसाओं के प्रति **“मरा हुआ-सा”** हो चुका था (रोमियों 4:19), एक पुत्र उत्पन्न हुआ – संसार को आशीष देने की पवित्र इच्छा से, उसके वंश के विषय में परमेश्वर की प्रतिज्ञा की पूर्ति में (उत्पत्ति 12:3; 22:18)। यह पवित्र इच्छा अब्राहम और सारा के द्वारा संसार को आशीष देने की परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप थी।

“परमेश्वर के यहाँ गुणवत्ता ही सब कुछ है, चाहे परिमाण ही वांछित लक्ष्य क्यों न हो।”

525 यह घटना उल्लेखनीय है और हमें स्मरण दिलाती है कि जब इसहाक ने रिबका से विवाह किया, तो उसे भी तब तक सन्तान जनने नहीं दिया गया जब तक शारीरिक लालसा ऊँची आकांक्षा के द्वारा हटा न दी गई। अब्राहम की प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी इसहाक ने **“अपनी पत्नी के लिये यहोवा से विनती की, क्योंकि वह बाँझ थी; और यहोवा ने उसकी विनती सुनी”** (उत्पत्ति 25:21), – और इस प्रकार एसाव और याकूब आए। पृथ्वी के सब कुलों को आशीष देने की अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा उनके मामले में याकूब को हस्तान्तरित हुई; और याकूब की चुनी हुई पत्नी राहेल भी तब तक सन्तान नहीं जन सकी जब तक उसने इसके लिए प्रार्थना नहीं की; होनहार सन्तान के जन्म में इन्द्रिय-लालसा या मानवीय महत्वाकांक्षा से कुछ बड़ा सम्मिलित होना आवश्यक था। **“परमेश्वर ने राहेल की भी सुधि ली, और उसकी सुनी”** (उत्पत्ति 30:22), और उसने उसे जन्म दिया जिसके चरित्र में कोई दोष दर्ज नहीं है, अर्थात् यूसुफ़, एक उल्लेखनीय व्यक्ति, जिसने अपने पूरे परिवार को भूख से मरने से बचाया; उसके पुत्र, एफ्रेम और मनश्शे, उन दो गोत्रों के प्रधान थे जिनके चारों ओर बाकी आठ गोत्र इकट्ठे हुए, जो मिलकर इस्राएल के दस

गोत्र बने; इसलिए पुराने नियम के इतिहास के बाद के युगों के भविष्यद्वक्ता “इसाएल” को, “यहूदा” से भिन्न, अक्सर “एप्रेम” कहते हैं (यिर्मयाह 31:18 आदि)।

“होनहार सन्तान के जन्म में इन्द्रिय-लालसा या मानवीय महत्वाकांक्षा से कुछ बड़ा सम्मिलित होना आवश्यक था।”

526 और ऐसा ही फिर हुआ जब परमेश्वर इसाएल के लिए एक छुड़ानेवाला चाहता था। शिमशोन की माँ “बाँझ थी और उसके कोई सन्तान न हुई थी”, और जब अन्त में एक स्वर्गदूत ने उसे दर्शन देकर आनेवाले बच्चे के विषय में निर्देश दिए, तो हमारे पास यह मानने का कारण है कि उसने और उसके पति ने इस विषय में प्रार्थना की थी, – विशेषकर इसलिए कि हम जानते हैं कि पिता मानोह ने अपेक्षित बच्चे के पालन-पोषण के विषय में और ठोस मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की (न्यायियों 13:8)। फिर हम उस अत्यन्त सुन्दर चरित्र पर आते हैं, भविष्यद्वक्ताओं की पाठशालाओं के संस्थापक, शमूएल पर। वह शारीरिक लालसा के उत्तर में नहीं, बल्कि हन्ना की उत्कट प्रार्थनाओं के उत्तर में आया (1 शमूएल 1:20)। परमेश्वर ने (इस मामले में भी) उसे तब तक सन्तान जनने से रोके रखा जब तक उसकी इच्छा पवित्र न हो गई। यह बहुत-सी अन्य माताओं का भी अनुभव रहा होगा, जिन्होंने पहले के समयों में महत्वपूर्ण सन्तानों को जन्म दिया, यद्यपि यह विशेष रूप से दर्ज नहीं है।

527 अब हम नए नियम पर आते हैं, ताकि इलीशिबा के अनुभव से यही पाठ सीखें। परमेश्वर संसार में मसीह के प्रवेश के लिए अग्रदूत को तैयार करने वाला था। उसने जकरयाह और इलीशिबा के परिवार को चुना और तुरन्त शरीर की सन्तान पाने की सम्भावना को बन्द कर दिया, ताकि इलीशिबा एक ऐसी सन्तान को जन्म दे सके जो पवित्र, कामवासना-रहित इच्छा से उत्पन्न हुई हो। उसने लम्बे समय तक प्रतीक्षा की – जब तक सब शारीरिक लालसाएँ समाप्त न हो गईं; तब स्वर्गदूत उनसे यह घोषणा करने भेजा गया: “हे जकरयाह, भयभीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है; और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा ... क्योंकि वह प्रभु के सामने महान होगा; ... और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा” (लूका 1:13-15)। इस प्रकार महान मनुष्य संसार में जन्मे, अर्थात् ऐसे मनुष्य जो परमेश्वर के सामने महान हैं, चाहे संसार उन्हें तुच्छ ही क्यों न समझे, जैसे हेरोदेस ने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को तुच्छ समझा, जब उसने पहले उसे बन्दीगृह में डाला और फिर उसका सिर कटवा दिया।

“इस प्रकार महान मनुष्य संसार में जन्मे, अर्थात् ऐसे मनुष्य जो परमेश्वर के सामने महान हैं, चाहे संसार उन्हें तुच्छ ही क्यों न समझे।”

अतिरिक्त टिप्पणी

पवित्र सन्तान के इन माता-पिताओं के साथ व्यवहार करने में परमेश्वर के उद्देश्य और उन लक्ष्यों के बीच, जो “जन्म-नियन्त्रण” के आधुनिक साधनों से साधे जाते हैं, एक अत्यन्त उल्लेखनीय अन्तर है। इच्छा के दो रूप प्रकट होने के लिए आपस में होड़ करते हैं, और परमेश्वर यह निश्चय करता है कि पवित्र सन्तान के लिए शारीरिक लालसा मिट जाए और उसका स्थान सन्तान की वह लालसा ले, जो आत्मिक रूप से प्रार्थना और विनती में प्रकट होती है। इसके विपरीत, मनुष्य के बनाए आधुनिक साधन सन्तान की लालसा की अभिव्यक्ति को घटाते हैं और गैर-ज़िम्मेदार शारीरिक लालसा को खुली छूट देते हैं। ऐसे सम्बन्धों से उत्पन्न सन्तान, यदि अन्ततः उसे जन्म लेने दिया जाए, तो वह सचमुच “निम्न जन्म की” होगी।

पाठ 100 – पहिलौठे का अधिकार या दाल का एक भोजन?

829 तलमूद के “हव्वा के दस शापों” (देखिए खण्ड 106) से निकली वह झूठी शिक्षा, कि परमेश्वर हव्वा के पाप के कारण स्त्रियों को निश्चित समयों पर पीड़ा का दण्ड देता है, एक दुष्ट और क्रूर अन्धविश्वास है, जिसका पवित्रशास्त्र समर्थन नहीं करता और जो हमारी बुद्धि के योग्य नहीं है। उत्पत्ति 3:16 विवाह-सम्बन्ध के भीतर पुरुषों की स्वार्थी और कपटी कामुकता के लिए एक आवरण बन जाता है, जब इस पद को तोड़-मरोड़कर और गलत रूप से इस प्रकार पढ़ा जाता है: “तेरी लालसा तेरे पति की ओर होनी चाहिए” (लूथर (Luther), जर्मन बाइबल अनुवाद)। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा ईश्वरीय न्याय का विकृत चित्र है, क्योंकि क्या पुरुष भी स्त्रियों के समान हव्वा की सन्तान नहीं हैं? इसमें दण्ड पाप के अनुसार नहीं, बल्कि लिंग के अनुसार ठहराया जाता है; और किसी मनुष्य के लिंग के लिए केवल स्वयं परमेश्वर ही उत्तरदायी है।

830 इसके अतिरिक्त यह शिक्षा, कि स्त्री को कलीसिया में स्थायी रूप से “चुप रहना” चाहिए, अपने पति की आज्ञा माननी चाहिए और कभी शिक्षा देने या प्रचार करने का साहस नहीं करना चाहिए, क्योंकि हव्वा ने पाप किया था, प्रायश्चित्त की शिक्षा को नष्ट कर देती है और मसीह से यह महिमा छीन लेती है कि उसकी मृत्यु ने सबके पापों का, निश्चय ही हव्वा के पापों का भी, प्रायश्चित्त किया। यह प्रोटेस्टेंटवाद की आत्मा के पूर्णतः विपरीत है। लूथर कहते हैं: “यह एक बड़ी भूल है कि हम स्वयं अपने पापों के लिए परमेश्वर के न्याय को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करें, क्योंकि परमेश्वर उन्हें सदा अपार अनुग्रह से सेंट-मेंत क्षमा करता है।”

831 और फिर भी, चाहे यह कितना ही आश्चर्यजनक क्यों न हो, ऐसा प्रतीत होता है कि लूथर ने, दूसरों के समान, स्त्रियों के लिए “मुफ्त अनुग्रह” के विचार को कभी नहीं समझा। बताया जाता है कि उन्होंने कहा: “प्रसव में मृत्यु परमेश्वर के महान कार्य और आज्ञाकारिता में मरने के सिवाय और कुछ नहीं है। यदि स्त्रियाँ गर्भ ढोते-ढोते थक जाएँ और अन्त में मर भी जाएँ, तो इसमें कोई हानि नहीं। उन्हें ढोते-ढोते मर जाने दो, वे इसी के लिए हैं।” लूथर “विवेक की स्वतन्त्रता” को बहुत महत्व देते थे, परन्तु स्त्रियों के विषय में उन्होंने कहा: “वह पुरुष के बिना न कुछ आरम्भ कर सकती है, न पूरा कर सकती है; जहाँ वह है, वहीं उसे रहना चाहिए और उसके सामने ऐसे झुकना चाहिए जैसे किसी स्वामी के सामने, जिसका वह भय मानेगी और जिसके वह अधीन और आज्ञाकारी रहेगी।” उन्होंने स्त्रियों के लिए “विवेक की स्वतन्त्रता” का कोई स्थान नहीं छोड़ा।

832 लूथर बाइबल-व्याख्याकारों के सामान्य स्वर का कोई अपवाद नहीं हैं। हो सकता है कि वे अपने कथनों में कुछ दूसरों से अधिक कठोर हों। सौभाग्य से स्त्रियों ने, जब उन्होंने प्रचारकों द्वारा घोषित “मुफ्त अनुग्रह” को सुना, तो उसे अपने लिए ग्रहण कर लिया। और पौलुस की तथाकथित शिक्षा के विपरीत, हाल के वर्षों में स्त्रियों को कलीसियाओं की सार्वजनिक सभाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया है, क्योंकि यह देखा गया कि उनकी भागीदारी के बिना सभाएँ नीरस थीं। परन्तु कलीसिया को ऐसी शिक्षा-धारा का समर्थन करने का क्या अधिकार है जिसकी वह स्वयं अपने व्यवहार से अवहेलना करती है? क्या यह समय नहीं है कि कलीसिया या तो अपना व्यवहार बदले या इन शिक्षाओं को अपनी टीकाओं से हटा दे, और किसी न किसी रीति से दोनों में मेल बैठाए? यह कर्तव्य विशेष रूप से स्त्रियों पर है कि वे अपने स्वयं के व्यवहार, अर्थात् सार्वजनिक सभाओं में भागीदारी, और बाइबल की उन शिक्षाओं के बीच, जो सामान्यतः उस पर आरोपित की जाती हैं, यह मेल स्थापित करें।

833 परन्तु यदि हम अपने विश्वास और अपनी शिक्षा से इस धारणा को निकाल दें कि परमेश्वर ने हव्वा के पाप के कारण उस पूरे लिंग पर, जिसकी हव्वा थी, विनाशकारी रूप से अपना हाथ रखा है – तो इस शिक्षा का क्या होगा

कि स्त्री के उस वंश की प्रतिज्ञा, जो सर्प के सिर को कुचल डालेगा, सब स्त्रियों की है? अन्तर यह है: उत्पत्ति 3:16 की दुःखद भविष्यद्वाणी स्त्रियों की **शारीरिक रूप से विरासत में मिली पीड़ा** और दुःख में बहुतायत से पूरी हुई है। उत्पत्ति 3:15 की महिमामय भविष्यद्वाणी भी बहुतायत से पूरी होगी, परन्तु शारीरिक विरासत के द्वारा **नहीं**, बल्कि स्वेच्छा से किए गए **निर्णय** के द्वारा।

834 भविष्यद्वाणी भाग्य का लेख नहीं है। कोई भी स्त्री इस भविष्यद्वाणी की पूर्ति की महिमामय नियति के लिए पहले से ठहराई हुई नहीं है, कि स्त्री का वंश सर्प के सिर को कुचल डालेगा। यह मेरी इच्छा के विरुद्ध बस यों ही मुझ पर नहीं आ पड़ेगा – कि मैं चाहे कुछ भी करूँ, आनेवाली बात पर घमण्ड कर सकूँ। हमसे केवल इतना कहा गया है कि **कुछ स्त्रियाँ** मसीह यीशु में परमेश्वर की स्वर्गीय बुलाहट के इस इनाम को थाम लेंगी; और यदि मैं उनके साथ नहीं जुड़ती, तो मेरा अपमान और मेरा अन्तिम दण्ड और भी बड़ा होगा, क्योंकि इनाम मेरे सामने था और मैंने उसे तुच्छ जाना।

835 जैसा मैं पहले बता चुकी हूँ, पूरी बाइबल में किसी भी पाप को मनुष्यों के तिरस्कार के लिए इतना अधिक नहीं छोड़ा गया जितना एसाव के पाप को। उसके सामने पहिलौठे का अधिकार था, और इस पहिलौठे के अधिकार के साथ अपने पिता की भविष्यद्वाणी-भरी आशीष भी। परन्तु ये भविष्य की बातें थीं, जिनके आने में बहुत देर हो सकती थी, जबकि वह शारीरिक भूख मिटाने की तीव्र आवश्यकता महसूस कर रहा था। वह उस वंश-परम्परा में खड़ा हो सकता था जिसके द्वारा मसीह संसार में आया; परन्तु मसीह अभी बहुत समय तक आनेवाला नहीं था, – हाँ, वह लगभग सत्रह शताब्दियों तक नहीं आया। एसाव ने दाल के एक भोजन के बदले अपना पहिलौठे का अधिकार बेच दिया।

836 नया नियम उसे “अधर्मी, जिस ने एक बार के भोजन के बदले अपने पहिलौठे होने का पद बेच डाला” कहता है, और आगे कहता है: “तुम जानते तो हो कि बाद में जब उसने आशीष पानी चाही, तो अयोग्य गिना गया” (इब्रानियों 12:16-17)। उस पर, पहिलौठे के अधिकार के उत्तराधिकारी पर, ठहरी हुई उसके पिता की आशीष उसकी सांसारिक भलाई में बहुत योगदान देती; परन्तु इस अधिकार को बेच देने के बाद वह इस आशीष का उत्तराधिकारी नहीं हो सका। वह काम बहुत पहले ही किया जा चुका था। परिवर्तन के लिए अब कोई स्थान नहीं था। उसे दाल का एक भोजन मिला, परन्तु उसने अपने पिता की सम्पत्ति का दोहरा भाग और परिवार में सम्मान का स्थान खो दिया। इसहाक पहिलौठे की उस आशीष को, जो उसने याकूब पर कह दी थी, वापस एसाव पर स्थानान्तरित नहीं करता। मेरे विचार में उसने समझ लिया था कि एसाव को केवल **सांसारिक** लाभ की चिन्ता थी।

837 एसाव के आचरण और मूसा के आचरण से बड़ा विरोधाभास कोई नहीं खींचा जा सकता, जिसके विषय में इब्रानियों की पत्री का वही लेखक लिखता है: “विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया ... और मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा”, जो उसके आनन्द के लिए उसके चरणों में रखा गया था (इब्रानियों 11:24-26)। ज़रा कल्पना कीजिए! यह सुसंस्कृत मूसा, जिसे मिस्रियों की सारी विद्या सिखाई गई थी, राजा की बेटी का पुत्र! वह सब कुछ से मुँह मोड़ लेता है और **मिस्रियों के दासों** का पक्ष लेता है! कैसा कट्टरपन्थी! वह एक मसीह की बाट जोहता है और उस मसीह के लिए सारे संसार को बलिदान कर देता है, मसीह के आने से पन्द्रह सौ वर्ष पहले!

838 और हमारे समय की स्त्रियाँ क्या करेंगी? क्या वे कहेंगी: “यह सम्भावना इतनी दूर है कि मुझे आकर्षित नहीं करती। यदि मैं देख सकती कि बड़े परिश्रम और बहुत आत्म-त्याग के द्वारा **मेरे समय में** कुछ सार्थक प्राप्त किया जा सकता है, तो बात और होती। परन्तु जो थोड़ा-सा मैं संसार के सुसमाचार-प्रचार और मसीह के आगमन को

शीघ्र करने के लिए कर सकती हूँ, उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। मुझे सार्वजनिक रूप से शिक्षा देने, प्रचार करने या प्रार्थना करने में कोई रुचि नहीं है। मैं उन लोगों में नहीं होना चाहती जो सदा घोषणा करते रहते हैं कि मसीह फिर आ रहा है, और फिर वह आता ही नहीं। वे हँसी के पात्र हैं। मैं उनके साथ नहीं जुड़ सकती।” ऐसे लोग “मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन नहीं समझते”।

“हमारे समय की स्त्रियाँ क्या करेंगी? क्या वे कहेंगी: ‘यह सम्भावना इतनी दूर है कि मुझे आकर्षित नहीं करती?’”

839 हम किस समूह में होंगी? यही वह प्रश्न है जिसका उत्तर हम स्त्रियों में से हर एक को देना है। इस विषय में अनिर्णय किसी काम का नहीं। एक बड़ी प्रतिज्ञा और भविष्यद्वाणी – पूरी बाइबल में सबसे बड़ी – हम स्त्रियों के सामने है। कोई बचने का मार्ग नहीं है; हमें या तो वह चुनना है जो सबसे ऊँचे दृष्टिकोण से देखने पर सर्वोत्तम है, या फिर अपने को एसाव सिद्ध करना है। परमेश्वर ने हमारे विश्वास के सामने यह चुनौती रखी है। क्या हम अपने पहिलौठे के अधिकार को तुच्छ जानें? परमेश्वर न करे!

उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक कैथरीन सी. बुशनेल (Katharine C. Bushnell) स्त्रियों से सम्बन्धित (लगभग) हर बाइबल-स्थल का गहन विवेचन प्रस्तुत करती हैं। इब्रानी और यूनानी की भाषाविद् होने के नाते वे इन स्थलों का उनकी मूल भाषाओं में और उनके ऐतिहासिक सन्दर्भ में अध्ययन करती हैं, और ऐसी अन्तर्दृष्टियों तक पहुँचती हैं जिन्हें बाइबल-अनुवादकों ने कभी-कभी धुँधला कर दिया है। यह पुस्तक स्त्रियों के पक्ष में सामाजिक सुधारों के लिए बुशनेल के जीवन भर के प्रयासों से उत्पन्न हुई, जिनमें उन्होंने स्त्रियों की स्थिति और पवित्रशास्त्र की गलत समझ के बीच सम्बन्ध देखे। शोधकर्ता 1921 में इसके पहले प्रकाशन से ही उनके इस अग्रणी कार्य पर निर्भर रहे हैं और इसे कलीसिया, परिवार और समाज में स्त्री की भूमिका के प्रश्न पर सम्पूर्ण बाइबल को ध्यान में रखनेवाले सबसे अच्छे दृष्टिकोणों में से एक मानते हैं।

जागो, हव्वा — क्योंकि आकाश शीघ्र ही तुम्हारे ऊपर उतरनेवाला है!

कैथरीन सी. बुशनेल (Katharine C. Bushnell) (1855-1946) परमेश्वर की एक साहसी और प्रतिभाशाली सेविका थीं, जिन्होंने इस पद को अपने जीवन का आदर्श-वाक्य बना लिया था: “जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।” वे डॉक्टर, मिशनरी, सुधारक, लेखिका और वक्ता थीं, और साथ ही एक प्रखर और मौलिक विदुषी, जो सात भाषाएँ बोलती थीं और प्राचीन यूनानी तथा इब्रानी में निपुण थीं। बुशनेल ने चिकित्सा का काम छोड़ दिया, ताकि वह कर सकें जिसे वे और भी महत्वपूर्ण काम समझती थीं, अर्थात् 19वीं शताब्दी के स्त्री-आन्दोलन के Women’s Christian Temperance Union (WCTU) में अग्रणी भूमिका निभाकर मनुष्यों की अपमानजनक जीवन-परिस्थितियों को बदलना। स्त्रियों की बाइबल-आधारित स्थिति बुशनेल के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी, क्योंकि वे इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि स्त्रियों की सामाजिक और आत्मिक अधीनता के लिए गलत अनुवाद उत्तरदायी थे। सन् 1896 में उन्होंने WCTU छोड़ दिया, ताकि अपने शेष वर्ष लिखने और स्त्रियों की पूर्ण समानता के विषय में परमेश्वर के मूल और अपरिवर्तित उद्देश्य के बाइबल-आधारित सत्य को आगे पहुँचाने के कार्य में लगाएँ।



100 पाठों वाली पठन- और अध्ययन-पुस्तक + टिप्पणियों के लिए स्थान

ISBN 978-3-94447-225-6 (RVB)

ISBN 978-3-86269-206-4 (VKW)

टिप्पणियाँ

1. “पुराना नियम” और “नया नियम” शब्दों की लम्बाई के कारण इन पाठों में आगे पहले शब्द के लिए पु.नि. और दूसरे के लिए न.नि. लिखा गया है, जबकि बड़ा अक्षर M. विद्यार्थी को दोनों में किसी पद के हाशिये पर दिए गए वैकल्पिक पाठ की ओर संकेत करता है।
2. उन आरम्भिक हिस्सियों के बीच दीना के साथ हमोर का व्यवहार वास्तव में विवाह ही था। याकूब की और भी बेटियाँ थीं, यह हम उत्पत्ति 46:7 से जानते हैं।
3. *The Herods*, पृ. 15
4. तलमूद में बेन सीरा के “कम से कम चालीस” उद्धरण हैं – *Lange's Commentaries, Apokryphen*, पृ. 276।